

श्री  
न्यायांजोनिधि मुनि श्रीआत्माराम  
जी आनंद विजयजी कृत पूजा संग्रह.

तथा अन्यकृत  
स्तवन, गहूंखिनो अने मंजुलसहित  
श्री नवपदजीनी पूजा  
तेने

श्री मुंबापुरीमध्ये  
श्रावक जीमसिंह माणकें

निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां छापी-प्रसिद्ध कर्यो.

संवत् १९५५. सने १८९८.



# अथ आत्मारामजी विरचित पूजासंग्रहनी अनुक्रमणिका.

अनुक्रमांक.	विषयनाम.	पृष्ठांक.
१	श्रीमद्यशोविजयजीकृत नवपद पूजा.	.... १
२	नवपदकाव्य. ....	.... १ए
३	श्रीमदानंदविजयजी आत्मारामजीकृत विं- शतिस्थानक पूजा. ....	.... २२
४	आत्मारामजी महाराजकृत सत्तरचेदी पूजा.	४४
५	आत्मारामजीकृत अष्टप्रकारी पूजा.	.... ६३
६	आत्मारामजीकृत ऋषन्नजिनस्तवन, मन०	७७
७	आत्मारामजीकृत द्वितीयऋषन्नजिनस्तवन	७८
८	आत्मारामजीकृत धर्मजिनस्तवन. क्युं वि०	८०
९	राजसिंहकृत ऋषन्नजिनस्तवन. लागीद्वग०	८०
१०	जिनस्तवन. आज प्रभु० ॥....	.... ८०
११	चंदनकृत वीतरागस्तवन, श्रीवीतरागको०	८१
१२	कपूरविजयकृत शांतिजिनस्तवन. शांतिवद०	८१
१३	जिनस्तवन. पांचवरण० ॥....	.... ८२
१४	ज्ञानविमलसूरिकृत महावीर जिनस्तव०	८२

( ३ )

- १५ अध्यात्मसन्धाय. अध्यात्म प्रीत लागी रे ७३  
१६ वैराग्यपद. छुनियां मतलब ॥ .... ७४  
१७ नेमजिनस्तवन. मोरवा बप्पैया ॥ .... ७४  
१८ समेतशिखरजीनी लावणी. बाराकोश विस्तार ७५  
१९ गुरुगुण गहूंली. श्रोतारे सुणो ॥ .... ७६  
२० गुरुगुण लहरी, जवि तुम सुणजो रे ॥ .... ७७  
२१ गहूंली जाग पहेलो. एमां महामुनि आत्मा  
रामजीनुं जन्मचरित्र वर्णव्युं ठे. जखुं थयुं रे ॥ ७९  
२२ गहूंली जाग बीजो. कहां गया रे मारे सु ७०  
२३ गहूंली. रहो गुरु राजनगर ॥ .... ७२  
इति समाप्त.

॥ अथ ॥

॥ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत  
नवपद पूजा प्रारंभः ॥

तत्र.

॥ प्रथम अरिहंतपद पूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं, उपजातिवृत्तम् ॥ उप्पन्नसन्नाणमहो म-  
याणं, सप्पाडिहेरासण संठियाणं ॥ सदेसणाणं दिय  
सज्जाणाणं, नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥

॥ जुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ नमोऽनंतसंतप्रमोदप्रदा-  
न, प्रधानाय ज्ञव्यात्मने ज्ञास्वताय ॥ थया जेहना  
ध्यानथी सौख्यज्ञाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपाल  
राजा ॥१॥ कस्यां कर्म दुर्मर्म चक चूर जेणें, ज्ञत्वां  
ज्ञव्य ! नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना ज्ञव्य !  
ज्ञावें त्रिकाळे, सदा वासियो आतमा तेण काळें  
॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदयें करीने, दिये देश-  
ना ज्ञव्यने हित धरीनें ॥ सदा आठ महापाडिहा-  
रें समेता, सुरेशें नरेशें स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥४॥ कस्यां

( १ )

घातियां कर्म चारे अलगां, जवोपग्रही चार जे  
ढे विलगां ॥ जगत् पंच कढ्याणकें सौख्य पामे, न-  
मो तेह तीर्थकरा मोहकामें ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ देशी उलालानी ॥ तीर्थपति अरिहा न-  
मुं, धर्म धुरंधर धीरो जी ॥ देशना अमृत वरसता, नि-  
जवीरज वड वीरो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ वर अख-  
य निर्मल ज्ञानजासन, सर्वज्ञाव प्रकाशता ॥ निजशु-  
द्ध श्रद्धा आत्मजावें, चरणथिरता वासता ॥ जिन  
नाम कर्म प्रज्ञाव अतिशय, प्रातिहारज शोचता ॥  
जगजंतु करुणावंत जगवत, जविक जननें शोचता ॥ १ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ त्रीजे  
जव वरथानक तप करी, जेणें बांध्युं जिननाम ॥  
चोसठ इंद्रें पूजित जे जिन, कीजें तास प्रणाम रे ॥  
जविका ! सिद्धचक्रपद वंदो, जिम चिरकालें नंदो रे  
॥ ज० ॥ सि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जेहनें होय  
कल्याणक दिवसें, नरकें पण अजवालुं ॥ सकल अ-  
धिकगुण अतिशयधारी, ते जिन नमि अघ टालुं रे  
॥ ज० ॥ सि० ॥ २ ॥ जे तिहुनाण समग्ग उप्पन्ना,  
जोग करम ढीण जाणी ॥ लेइ दीहा शिहा दियेज-  
नने, ते नमियें जिननाणी रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३ ॥ महागोप

( ३ )

महा माहण कहियें, निर्यामक सब्वाह ॥ उपमा ए-  
हवी जेहने ठाजे, ते जिण नमियें उत्साह रे ॥ ज० ॥  
सि० ॥ ४ ॥ आठ प्रातिहारज जस ठाजे, पांत्रीश  
गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते  
जिन नमियें प्राणी रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ अरिहंत पद ध्यातो थको, दबहगुण प-  
ज्जाय रे ॥ जेद ठेद करी आतमा, अरिहंत रूप  
थाय रे ॥ १ ॥ वीर जिनेसर उपदिशे, सांजलजो  
चित्त लाइ रे ॥ आतमध्यानें आतमा, रुद्धि मले सवि  
आई रे ॥ २ ॥ वी० ॥ इति अरिहंत पद पूजा ॥

॥ द्वितीय सिद्धपद पूजा प्रारंभः ॥

॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ सिद्धाणमाणंद रमालयाणं ॥  
नमो नमोऽणंतचउक्कयाणं ॥

॥ जुजंग प्रयातवृत्तम् ॥ करी आठ कर्म ह्यें पा-  
र पाम्या, जरा जन्म मरणादि जय जेणें वाम्या ॥  
निरावरण जे आत्मरूपें प्रसिद्धा, थया पार पामी स-  
दासिद्ध बुद्धा ॥ १ ॥ त्रिजागोन देहावगाहात्मदेशा,  
रह्या ज्ञानमयजातवर्णादिक्लेशा ॥ सदानंद सौख्याश्रि-  
ता ज्योतिरूपा, अनाबाध अपुनर्जवादिस्वरूपा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उल्लादानी देशी ॥ सकल करममल

( ४ )

हृदय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्याबाध प्रज्जु-  
तामयी, आतम संपत्तिचूपो जी ॥ १ ॥ उल्लाखो ॥  
जेह चूप आतम सहज संपत्ति, शक्ति व्यक्तिपणें करी ॥  
स्वद्रव्यक्षेत्र स्वकालजावें, गुण अनंता आदरी ॥ स्व-  
जाव गुणपर्याय परिणति, सिद्धिसाडन परजणी ॥  
मुनिराज मानसहंससमवड, नमो सिद्ध महागुणी ॥१॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ सम-  
यपयेसंतर अणफरसि, चरम तिजाग विशेष ॥ अव-  
गाहन लही जे शिव पहोता, सिद्ध नमो ते अशेष  
रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ६ ॥ पूर्वप्रयोगनें गतिपरिणामें, बंधन  
ढेद असंग ॥ समय एक ऊर्ध्वगति जेहनी, ते सिद्ध  
प्रणमो रंग रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ७ ॥ निर्मल सिद्धशिलानी  
उपरें, जोयण एक लोगत ॥ सादि अनंत तिहां स्थि-  
ति जेहनी. ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
८ ॥ जाणे पण न सके कही परगुण, प्राकृत तिम  
गुण जास ॥ उपमाविण नाणी चवमांहे, ते सिद्ध  
दीयो उद्वास रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ९ ॥ ज्योतिशुं ज्योति मिली  
जस अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम र-  
मापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १०  
॥ ढाल ॥ रूपातीत स्वजाव जे, केवल दंसणना-



( ५ )

णी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होये सिद्ध गुण  
खाणी रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ इति सिद्धपदपूजा समाप्ता ॥

॥ तृतीय आचार्यपद पूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ सूरीणदूरीकयकुग्ग-  
हाणं नमो नमो सूरसमप्पहाणं ॥

॥ जुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्त्व  
ताजा, जिनेन्द्रागमें प्रौढ साम्राज्यनाजा ॥ षड्वर्गव-  
र्गित गुणें शोभमाना, पंचाचारने पालवे सावधाना ॥  
१॥ ऋविप्राणिने देशना देश काले, सदा अप्रमत्ता  
यथासूत्र आले ॥ जिके शासनाधारदिग्दंतिकट्टपा,  
जगें ते चिरंजीवजो शुद्धजट्टपा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥ आचारिज मुनिपति गु-  
णी, गुणठत्रीशी धामो जी ॥ चिदानंदरस स्वादता,  
परजावें निःकामो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ निःकाम  
निर्मल शुद्धचिद्धन, साध्यनिज निरधारथी ॥ निज  
ज्ञान दर्शन चरण वीरज, साधनाव्यापारथी ॥ ऋवि  
जीव बोधक तत्त्वशोधक, सयलगुण संपति धरा ॥ संव-  
रसमाधी गतउपाधी, दुविध तपगुण आगरा ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ पंच  
आचार जे सूधा पाळे, मारग जांखे साचो ॥ ते आ-

( ६ )

चारज नमियें तेहशुं, प्रेम करीजें जाचो रे ॥ ज्ञवि० ॥  
सि० ॥ ११ ॥ वर ठत्रीश गुणें करी सोहे, युगप्र-  
धान जन मोहे ॥ जग बोहे न रहे खिण कोहे, सू-  
रि नमुं ते जोहे रे ॥ ज्ञ० ॥ सि० ॥ १२ ॥ नित  
अप्रमत्त धर्म उवएसें, नहिं विकथा न कषाय ॥ जे-  
हने ते आचारिज नमियें, अकलुष अमल अमाय  
रे ॥ ज्ञ० ॥ सि० ॥ १३ ॥ जे दिये सारण वारण  
चोयण, पडिचोयण वली जनने ॥ पटधारी गह्व  
थंज आचारिज, ते मान्या मुनि मनने रे ॥ ज्ञ० ॥  
सि० ॥ १४ ॥ अहमियें जिन सूरज केवल, चंदें  
जे जगदीवो ॥ जुवन पदारथ प्रगटन पटु ते, आचार  
य चिरंजीवो रे ॥ ज्ञ० ॥ सि० ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ध्याता आचारिज ज्ञाना, महामंत्र शुभ  
ध्यानी रे ॥ पंच प्रस्थाने आतमा, आचारिज होय प्रा-  
णी रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ इति आचार्यपद पूजा स० ॥

॥ चतुर्थ उपाध्यायपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ सुतह विहारणतप्प-  
रणं ॥ नमो नमो वायगकुंजराणं ॥

॥ जुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ नहीं सूरि पण सूरिगण-  
ने सहाया, नमूं वाचका त्यक्तमदमोहमाया ॥ वलि

छादशांगादि सूत्रार्थ दानें,जिके सावधानानिरुद्धाजि-  
मानें ॥ १ ॥ धरे पंचने वर्गवर्गित गुणौघा, प्रवादि  
द्विपोढेदने तुल्यसिंघा ॥ गणी गह्वसंधारणें स्थंज-  
चूता, उपाध्याय ते वंदियें चित्प्रचूता ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥ खंतिजुआ मुत्ति जु-  
आ, अज्जवमहव जुत्ता जी ॥ सच्चं सोय अकिंचणा, त-  
व संजम गुणरत्ता जी ॥ १ ॥ उलाढो ॥ जे रम्या ब्रह्म  
सुगुत्ति गुत्ता, समिति समिता श्रुतधरा ॥ स्याछादवा-  
दें तत्त्ववादक, आत्मपर विजंजनकरा ॥ जवज्जीरु  
साधन धीरशासन, वहन धोरी मुनिवरा ॥ सिद्धांत  
वायण दान समरथ, नमो पाठकपदधरा ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ छा-  
दश अंग सज्जाय करे, जे पारग धारग तास ॥ सूत्र  
अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवजाय उद्वास रे ॥  
॥ ज० ॥ सि० ॥ १६ ॥ अर्थ सूत्रनें दान विज्ञागें,  
आचारज उवजाय ॥ जव त्रणें जे लहे शिवसंपद,  
नमियें ते सुपसाय रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १७ ॥ मूरख  
शिष्य निपाई जे प्रजु, पहाणने पद्धव आणे ॥ ते उ-  
वजाय संकलजन पूजित,सूत्र अरथ सवि जाणे रे ॥  
ज० ॥ सि० ॥ १८ ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक,

( ८ )

आचारिज पदयोग ॥ जे उवजाय सदा ते नमतां,  
नावे ऋवऋय सोग रे ॥ ऋ० ॥ सि० ॥ १९ ॥ बाव-  
ना चंदन रस समवयणें, अहितताप सवि टाळे ॥  
ते उवजाय नमीजें जे वढी, जिन शासन अजुवाळे  
रे ॥ ऋ० ॥ सि० ॥ २० ॥

॥ ढाल ॥ तपसश्चायें रत सदा, द्वादश अंगना  
ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जग  
त्राता रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति उपाध्यायपद पूजा ॥

॥ पंचम मुनिपद पूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ साहूण संसाहिअ  
संजमाणं ॥ नमो नमो सुद्ध दयादमाणं ॥

॥ जुजंगप्रयात वृत्तम् ॥ करे सेवना सूरिवायग ग-  
णीनी, करूं वर्णना तेहनी शी मुणिनी ॥ समेता स-  
दा पंचसमिति त्रिगुप्ता, त्रिगुप्तें नहीं काम जोगेषु क्षि-  
प्ता ॥ १ ॥ वढी बाह्य अच्यंतर ग्रंथि टाळी, होये मु-  
क्तिनें योग्य चारित्र पाळी ॥ शुजाष्टांग योगें रमे चि-  
त्त वाळी, नमूं साधने तेह निज पाप टाळी ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥ सकल विषय विष  
वारीनें, निःकामी निःसंगी जी ॥ ऋवदवताप शमाव-  
ता, आतमसाधन रंगी जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे रम्या

( ए )

शुद्ध स्वरूप रमणें, देह निर्मम निर्मदा ॥ काउसग्ग  
मुद्रा धीर आसन, ध्यान अज्यासी सदा ॥ तप तेज  
दीपे कर्म जीपे, नैव ठीपे परजणी ॥ मुनिराज करु-  
णासिंधु त्रिचुवन, बंधु प्रणमुं हित जणी ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥

जिम तरुफूलें जमरो बेसे, पीडा तस न उपा-  
वे ॥ लइ रसने आतम संतोषे, तिम मुनिगोचरी जा-  
वे रे ॥ ज० ॥ सि ॥ २१ ॥ पंच इंद्रियने कषाय नि-  
रुंधे, षट कायक प्रतिपाल ॥ संयम सतर प्रकार  
आराधे, वंदूं तेह दयाल रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २२ ॥  
अठार सहस शीलांगना धोरी, अचलआचार चरि-  
त्र ॥ मुनि महंत जयणायुत वांदी, कीजें जनम पवि-  
त्र रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २३ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्ति जे पा-  
ले, बारसविह तप सूरा ॥ एहवा मुनि नमियें जो  
प्रगटे, पूरवपुण्य अंकूरा रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २४ ॥  
सोना तणी परें परीक्षा दीसे, दिन दिन चढते वानें ॥  
संजमखप करता मुनि नमियें, देशकाल अनुमानें  
रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २५ ॥

॥ ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहे, नवि हरषे न-  
वि सोचे रे ॥ साधु सुधा ते आतमा, शुं मूंके शुं

लोचे रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ इति मुनिपद पूजा समाप्ता ॥

॥ षष्ठ सम्यक्तत्व दर्शन पद पूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ जिणुत्ततत्ते रुइ लक्क-  
णस्स, नमो नमो निम्मलदंसणस्स ॥

॥ जुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ विपर्यास हठवासना रूप  
मिथ्या, टले जे अनादि अठे जेम पथ्या ॥ जिनोक्तें  
होइ सहजथी श्रद्धधानं, कहियें दर्शनं तेह परमं नि-  
धानं ॥ १ ॥ विना जेहथी ज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रं  
विचित्रं नवारण्यकूपं ॥ प्रकृति सातने उपशमें दाय  
ते होवे, तिहां आपरूपें सदा आप जोवे ॥ २ ॥

॥ ढाल, उलालानी देशी ॥ सम्यग्दर्शन गुण न-  
मो, तत्त्व प्रतीत स्वरूपो जी ॥ जसु निरधार स्वभाव  
ठे, चेतनगुण जे अरूपो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे  
अनुप श्रद्धा धर्म प्रगटे, सयल परईहा टले ॥ निज  
शुद्धसत्ता प्रगट अनुभव, करण रुचिता ऊठले ॥ बहु  
मान परिणति वस्तुतत्त्वं, अहव तसु कारणपणे ॥  
निज साध्यदृष्टें सर्व करणी, तत्त्वता संपति गणे ॥२॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ शुद्ध  
देव गुरुधर्म परीक्षा, सद्गुणपरिणाम ॥ जेह पामीजें  
तेह नमीजें, सम्यग्दर्शन नाम रे ॥ न० ॥ सि० ॥

॥ १६ ॥ मलउपशम क्षय उपशम क्षयथी, जे होय  
 त्रिविध अजंग ॥ सम्यक्दर्शन तेह नमीजें जिनधमें  
 दृढरंग रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १७ ॥ पंच वार उपश-  
 मिय लहीजें, क्षय उपशमिय असंख ॥ एकवार क्षा-  
 यिक ते समकित, दर्शन नमियें असंख रे ॥ ज० ॥  
 सि० ॥ १८ ॥ जे विण नाण प्रमाण न होवे, चारि-  
 त्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निर्वाण न जे विण लहि-  
 यें, समकित दर्शन बलियो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १९ ॥  
 सडसठ बोदें जे अलंकरियुं, ज्ञानचारित्रनुं मूल ॥  
 समकित दर्शन ते नित प्रणमुं, शिवपंथनुं अनुकूल  
 रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २० ॥

॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुणा, क्षय उपशम जे  
 आवे रे ॥ दर्शन तेहिज आतमा, शुं होय नाम ध-  
 रावे रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इति सम्यक् दर्शन पूजा ॥

॥ सप्तम सम्यक्ज्ञानपद पूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ अन्नाणसंमोहतमोह-  
 रस्स नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥

॥ मुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ होये जेहथी ज्ञान शुद्ध  
 प्रबोधें, यथावर्ण नासे विचित्रावबोधें ॥ तेणें जाणि-  
 यें वस्तु षड् द्रव्यजावा, न हुये वितढा ( वाद )

निजेष्ठा स्वजावा ॥१॥ होय पंचमत्यादि सुज्ञानज्ञेदें,  
गुरूपास्तिथी योग्यता तेह वेदें ॥ वक्षी ज्ञेय हेय उ-  
पादेय रूपें, लहे चित्तमां जेम ध्वांतप्रदीपें ॥ २ ॥

॥ ढाल, उलालानी देशी ॥ जव्य ! नमो गुण ज्ञा-  
ननें, स्वपरप्रकाशक जावें जी ॥ परजय धर्मानंतता,  
ज्ञेदाज्ञेद स्वजावें जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे मुख्य प-  
रिणति सकल ज्ञायक, बोध जाव विलहना ॥ मतिआ-  
दि पंच प्रकार निर्मल, सिद्ध साधन लहना ॥ स्याद्वा-  
दसंगी तत्वरंगी, प्रथम ज्ञेदाज्ञेदता ॥ सविकल्पने  
अविकल्प वस्तु, सकल संशय ठेदता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ ज-  
ह्यजह्य न जे विण लहियें, पेय अपेय विचार ॥ कृ-  
त्य अकृत्य न जे विण लहियें, ज्ञान ते सकल आधा-  
र रे ॥ ज० ॥ नि० ॥ ३१ ॥ प्रथम ज्ञान नें पढी अहिं-  
सा, श्री सिद्धांतें जांख्युं ॥ ज्ञाननें वंदो ज्ञान म निंदो,  
ज्ञानियें शिवसुख चाख्युं रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३२ ॥  
सकल क्रियानुं मूल ते श्रद्धा, तेहनुं मूल जे कहियें ॥  
तेह ज्ञान नित नित वंदीजें, ते विण कहो किम रहि-  
यें रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३३ ॥ पंच ज्ञानमांहि जेह  
सदागम, स्वपर प्रकाशक तेह ॥ दीपक परें त्रिभुवन



उपगारी, वली जिम रवि शशी मेह रे ॥ ज० ॥ सि०  
॥ ३४ ॥ लोक ऊरध अध तिर्यगू ज्योतिष, वैमानि-  
कनें सिद्धि ॥ लोक अलोक प्रगट सवि जेहृथी, ते ज्ञा-  
नें मुज शुद्धि रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३५ ॥

॥ ढाल ॥ ज्ञानावरणी जे कर्म ठे, कय उपशम ते  
थाय रे ॥ तो हुवे एहिज आतमा, ज्ञानअबोधता जा-  
य रे ॥ वी० ॥ ७ ॥ इति सम्यक् ज्ञानपदपूजा ॥

॥ अष्टम चारित्रपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ आराहिअखंनिअस  
क्किअस्स, नमो नमो संजम वीरिअस्स ॥

॥ जुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ वली ज्ञानफल चरण ध-  
रियें सुरंगें, निराशंसता द्वाररोधप्रसंगें ॥ जवांजोधि  
संतारणे यानतुढ्यं, धरूं तेह चारित्र अप्राप्तमूल्यं ॥  
१ ॥ होयें जास महिमाथकी रंक राजा, वली छाद-  
शांगी जणी होय ताजा ॥ वली पावरूपोपि निःपा  
प थाय, थई सिद्ध ते कर्मने पार जाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलावानी देशी ॥ चारित्रगुण वली  
वली नमो, तत्त्वरमण जसु मूलो जी ॥ पररमणीय  
पणुं टळे, सकलसिद्ध अनुकूलो जी ॥१॥ उलावो ॥  
प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम, तत्त्वथिरता दममयी ॥

शुचि परम खंती मुक्ति दश पद, पंच संवर उपचयी ॥  
सामायिकादिक ज्ञेद धर्मे, यथाख्यातें पूर्णता ॥ अकषा-  
य अकलुष अमल उज्ज्वल, काम कश्मल चूर्णता ॥१॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ दे-  
श विरति ने सरव विरति जे, गृहि यति ने अजिराम ॥  
ते चारित्र जगत जयवंतुं, कीजें तास प्रणाम रे ॥ ज०  
॥ सि० ॥ ३६ ॥ तृणपरे जे षट खंरु सुख ठंकी, च-  
क्रवर्ति पण वरियो ॥ ते चारित्र अखय सुख कारण,  
ते में मनमांहे धरियो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३७ ॥ हुआ रांक  
पणे जे आदरी, पूजित पद नरिंदें ॥ अशरण शरण  
चरण ते वंदूं, पूखुं ज्ञान आनंदें रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
॥ ३८ ॥ बार मास पर्यायें जेहनें, अनुत्तर सुख अ-  
तिक्रमियें ॥ शुक्क शुक्क अजिजात्य ते ऊपर, ते चारित्र-  
नें नमियें रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३९ ॥ चय ते आ-  
ठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नाम  
निरुत्तें जांखुं, ते वंदूं गुणगेह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४० ॥  
॥ ढाल ॥ जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वजा-  
वमां रमतो रे ॥ लेश्या शुद्ध अलंकृत्यो, मोहवनें न-  
वि जमतो रे ॥ वी० ॥ ए॥ इत्यष्टम चारित्र पद पूजा ॥

॥ नवम तपपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ कम्महुमोम्मूलण  
कुंजरस्स, नमो नमो तिब्वतवोत्तरस्स ॥

मालिनीवृत्तम् ॥ इय नव पय सिद्धं, लद्धि वि-  
ज्जा समिद्धं ॥ पयडियमुरवग्गं, हींतिरेहासमग्गं ॥  
दिसिवइ सुरसारं, खोणि पीढावयारं ॥ तिजय विजय  
चक्कं, सिद्ध चक्कं नमामि ॥ १ ॥

॥ शुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ त्रिकाक्षिक पणे कर्म क-  
षाय टाले, निकाचित पणें बांधियां तेह बाले ॥ कहुं ते-  
ह तप बाह्य अंतर दु जेदें, क्कमायुक्त निर्हेतु दुर्ध्यान  
बेदे ॥ २ ॥ होये जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि,  
अवांठकपणें कर्म आवरणशुद्धि ॥ तपो तेह तप जे  
महानंद हेतें, होये सिद्धि सीमंतिनी जिम संकेतें ॥  
॥ ३ ॥ इस्या नवपद ध्यानने जेह ध्यावे, सदानंद  
चिहूपता तेह पावे ॥ वली ज्ञान विमलादि गुणरत्नधामा,  
नमूं ते सदा सिद्धचक्र प्रधाना ॥ ४ ॥

मालिनीवृत्तम् ॥ इम नवपद ध्यावे, परम आ-  
नंद पावे, नवजव शिव जावे, देव नरजव पावे ॥  
ज्ञान विमल गुण गावे, सिद्धचक्र प्रजावें, सवि डुरित  
समावे, विश्व जयकार पावे ॥ १ ॥

॥ ढाल, उढालानी देशी ॥ इहारोधन तप नढो,  
बाह्य अङ्गितर जेदें जी ॥ आतढसत्ता ँकता, पर  
परणति उढेदें जी ॥ १ ॥ उढालो ॥ उढेद कर्ढ अ-  
नादि संतति, जेह सिद्धपणूं वरे ॥ योगसंगें आहार  
टाढी, जाव अक्रियता करे ॥ अंतर ढुहूरत तत्त्व  
साधे, सर्व संवरता करी ॥ निज आतढसत्ता प्रगट  
जावें, करो तप गुण आदरी ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ इढ नवपद गुणढंरुलं, चउ निस्केप प्र-  
ढाणें जी ॥ सात नयें जे आदरे, सढ्यकूढानें जाणे  
जी ॥ ३ ॥ उढालो ॥ निरुद्धारसेंती गुणी गुणनो,  
करे जे बहु ढान ँ ॥ तसु करण ईहा तत्त्व रढणें,  
थाय निर्ढल ध्यान ँ ॥ इढ शुद्धसत्ता जढ्यो चेतन,  
सकल सिद्धि अनुसरे ॥ अढ्य अनंत ढहंत चिद्ध  
घन, परढ आनंदता वरे ॥ ४ ॥

॥ कलश ॥ इय सयल सुखकर गुणपुरंदर, सिद्ध  
चक्र पदावढी ॥ सवि लद्धिविज्जासिद्धिढंदर, जविक  
पूजो ढन रुढी ॥ उवजायवर श्रीराज सागर, ज्ञान  
धर्ढ सुराजता ॥ गुरु दीपचंद सुचरण सेवक, देवचंद  
सुशोचता ॥ १ ॥ इति कलश ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ जा-

णंता त्रिहुं ज्ञानें संयुत,ते जवमुगति जिणंद ॥ जेह  
 आदरे कर्म खपेवा, ते तप शिवतरु कंद रे ॥ ज० ॥  
 सि० ॥ ४१ ॥ कर्म निकाचित पण खय जाई, द्दमा  
 सहित जे करतां ॥ ते तप नमियें जेह दीपावे, जिन  
 शासन उजमंतां रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४२ ॥ आमोसही  
 पमुहा बहु लद्धि,होवे जास प्रजावें ॥ अष्ट महासिद्धि  
 नव निधि प्रगटे, नमियें ते तप जावें रे ॥ ज० ॥ सि०  
 ॥ ४३ ॥ फल शिवसुख महोदुं सुर नरवर, संपति जे-  
 हनुं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखुं वंदूं, शममकरंद  
 अमूल रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४४ ॥ सर्व मंगल मांहि  
 पहेळुं मंगल, वरणवियें जे ग्रंथें ॥ ते तप पद त्रिहुं  
 काल नमीजें, वर सहाय शिवपंथें रे ॥ ज० ॥ सि०  
 ॥ ४५ ॥ इम नवपद श्रुणतो तिहां लीनो, हुणं  
 तन्मय श्रीपाल ॥ सुजसविदास ठे चोथे खंभें, एह  
 इग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४६ ॥

॥ ढाल ॥ इग्यारोथें संवरी, परिणति समता योगें  
 रे ॥ तप ते एहिज आतमा, वर्ते निजगुण जोगें रे ॥  
 वी० ॥ १० ॥ आगम नोआगम तणो, जाव ते  
 जाणो साचो रे ॥ आतम जावें थिर होजो, परजावें  
 मत राचो रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी,

( १० )

घटमांहि ऋद्धि दाखी रे ॥ तिम नवपद ऋद्धि जाण  
जो, आतमराम ठे साखी रे ॥ वी० ॥ १२ ॥ योग  
असंख्य ठे जिन कहा, नव पद मुख्य ते जाणो रे ॥  
एह तणे अवलंबनें, आतमध्यान प्रमाणो रे ॥  
॥ वी० ॥ १३ ॥ ढाल बारमी ए हवी, चोथे खंभें  
पूरी रे ॥ वाणी वाचक जस तणी, कोइ नयें न अ-  
धूरी रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ इति नवपदपूजा समाप्ता ॥

॥ अथ काव्यम् ॥ द्रुतविलंबितं वृत्तम् ॥ विमलके-  
वलज्ञासनज्ञास्करं, जगति जंतुमहोदयकारणम् ॥  
जिनवरं बहुमानजलौघतः, शुचिमनाः स्नपयामि  
विशुद्ध्ये ॥ १ ॥ इति काव्यम् ॥ आ काव्य, प्रत्येक  
पूजादीठ कहेवुं ॥

॥ स्नात्र करतां जगद्गुरु शरीरें, सकल देवें विम-  
ल कलश नीरें ॥ आपणा कर्ममल दूर कीधां, तेणें  
ते विबुध ग्रंथें प्रसिद्धा ॥ २ ॥ हर्ष धरि अप्सरावृंद  
आवे, स्नात्र करि एम आशीष पावे ॥ जिहां लगेसु-  
र गिरि जंबुदीवो, अम तणा नाथ देवाधिदेवो ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत नव  
पदपूजा संपूर्णा ॥

( १९ )

॥ अथ नवपदकाव्य प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथमं अरिहंतपदकाव्यम् ॥

॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ नियंतरंगारिगणे सुनाणे, स-  
प्पाडिहेराशसयप्पहाणे ॥ संदेह संदोहरयं हरंतो,  
जाएह निच्चंपि जिणेरहंतो ॥ १ ॥

॥ श्री सिद्धपद काव्यम् ॥

॥ डुठठकम्मावरणप्पमुक्के, अनंतनाणाशिसिरीच-  
उक्के ॥ समग्गलोग्गपयव्वसिद्धे, जाएह निच्चंपि स-  
मग्गसिद्धे ॥ २ ॥

॥ श्री आचार्य पद काव्यम् ॥

॥ सुतव्वसंवेगमयं सुयेणं, संनीरखीरामय वीसु-  
येणं ॥ पीनंति जे ते उवजायराये, जायेह निच्चंपि  
कयप्पसाये ॥ ३ ॥

॥ श्रीउपाध्यायपदकाव्यम् ॥

॥ ननंसुहं दहि पीया न माया, जे दंति जिव्हा  
न्हि सूरी सपाया ॥ तम्हाहु ते चेव सया चजेह,  
जंमुस्क सुस्कां वहुं वहेह ॥ ४ ॥

॥ श्रीसाधुपद काव्यम् ॥

॥ खंते य दंते य सुगुत्तिगुत्ते, मुत्ते य संते गुण जोग

( १० )

जुत्ते ॥ गयप्पमाए गयमोहमाए, जाएह निच्चं मु-  
णि रायपाए ॥ ५ ॥

॥ श्रीसम्यग्दर्शनपदकाव्यम् ॥

॥ जं दव्वडिकाएसु सदहाणं, तं दंसणं सव्वगुण  
प्पहाणं ॥ कुग्गहि वाहीउवयंति जेणं, जहा विधेण  
रसायणेणं ॥ ६ ॥

॥ श्रीसम्यग्ज्ञानपदकाव्यम् ॥

॥ नाणं पहाणं नयचक्कसिळं, ततववोही कमयं  
पसिळं ॥ धरेह चित्तावसए फुरंतं, माणिक्कदीउबत  
मोहरंतं ॥ ७ ॥

॥ श्रीचारित्रपद काव्यम् ॥

॥ सुसंवरं मोहनरोधसारं, पंचप्पयारं विगमाइ  
यारं ॥ मूलोत्तराणेगगुणं पवित्तं, पात्तेह निच्चंपि हु स-  
च्चरित्तं ॥ ८ ॥

॥ श्रीतपपद काव्यम् ॥

॥ बप्पं तथा जित्तरेयमेयं, कयाय डुज्जे य कुक-  
म्म जेयं ॥ डुस्कक्कयुत्ते कयपावनासं, तवेण दहाग  
मयं निरासं ॥ ९ ॥ इति नवपदकाव्यं संपूर्णम् ॥



( ११ )

श्रीमदानंदविजयजीआत्मारामजीकृत  
विंशतिस्थानकपूजाप्रारच्यते.



॥ तत्र ॥

॥ प्रथम अरिहंतपदपूजाप्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ समरस रसजर अघहर, करम जरम सब नास ॥  
कर मन मगन धरम धर, श्रीशंखेश्वर पास ॥ १ ॥  
वस्तु सकल प्रकाशिनी, जासिनि चिद्धनरूप ॥  
स्यादवाद मतकाशिनी, जिनवाणी रसकूप ॥२॥ ठठे  
श्रंग आवश्यकें, वीश निमित्त विधान ॥ ते साधे  
जिनपद लहे, अजर अमरकी खान ॥३॥ जिन गणध-  
र वाणी नमी, आणी जाव उदार ॥ विंशति पद पू-  
जन विधि, कहिशुं विधि विस्तार ॥ ४ ॥ विंशति त-  
प पद सारिखी, करणी अवर न कोय ॥ जो जवि  
साधे रंगशुं, अर्हनरूपी होय ॥ ५ ॥ क्रमसैं पीठ  
त्रिकोपरें, थापी जिनवर वीश ॥ सामग्री सहु मेदि-  
ने, पूजे त्रिचुवन ईश ॥ ६ ॥ एक एक पद पूजियें,

( १२ )

पंच अष्ट सत्तार ॥ द्रव्यार्चनविधि जाणियें, इगविस  
विधि विस्तार ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ दो नयणांदा माख्या मरजादा परदेशीडा ॥ ए देशी ॥

॥ अरिहंत पद मनरंग, चिदानंद अरिहंत पद ०

॥ ए आंकणी ॥ चिदानंदघन मंगलरूपी, मिथ्याति-  
मिर दिणंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ १ ॥ चौतिस अतिशय

पैतिस वाणी, गुण बारे सुखकंद ॥ चि० ॥ अ० ॥

२ ॥ महागोप महामाहण कहियें, काटे नव नव

फंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ३ ॥ निर्यामक सत्तवाह जणी-

जें, जवि चकोर मनचंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ४ ॥ चार

निक्षेप रूप जग रंजन, रंजन करम नरिंद ॥ चि० ॥

अ० ॥ ५ ॥ अवर देव वामा वश कीने, तुं निकलं-

क महिंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ६ ॥ ज्ञायक नायक शुचगति

दायक, तुं जिन चिदूघन वृंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ७ ॥

देवपाल श्रेणिक पद साधी, अरिहंत पद निपजंद ॥

चि० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सर्व शिवंकर ईश निरंजन,

गत कलिमल सब धंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ९ ॥ जिनके

पंच कट्याणक जगमें, करे उद्योत अमंद ॥ चि० ॥

अ० ॥ १० ॥ आतम निर्मल जाव करीने, पूजो

त्रिचुवन इंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ११ ॥ इति ॥ १ ॥

( ३३ )

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥ अतिशयादिगु-  
णाब्धिवदान्यकं, जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥ निखि-  
लकर्मशिलोच्चयसूदनं, कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥  
मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-  
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमते अर्हते जलादिकं यजामहे  
स्वाहा ॥ आ काव्य, तथा मंत्र, प्रत्येक पूजादीठ कहेवा.

॥ अथ द्वितीय सिद्धपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ तनु त्रिजाग दूरें करी, घन स्वरूप अघ ना-  
श ॥ ज्ञान स्वरूपी अगमगति, लोकालोक प्रकाश ॥ १ ॥  
अक्षर अमर अगोचरा, रूप रेख विन लाल ॥ जे  
पूजे सो जवि लहे, अरहन् पद उजमाल ॥ २ ॥

॥ कान्हा में नहि रहेणारे, तुमचे रे संग चलुं ॥ ए देशी ॥

॥ सिद्ध अचल आनंदी रे, ज्योतिमें ज्योति मि-  
ली ॥ ए आंकणी ॥ अज अलख अमूरति रे, निज  
गुण रंग रली ॥ सि० ॥ १ ॥ शिव अजर अनंगी रे,  
करमको कंद दली ॥ सि० ॥ २ ॥ समय एकमें त्रि-  
पदी रे, नास थिर आविर वली ॥ सि० ॥ ३ ॥ रु-  
जु एक समय गतिका रे, अनंत चतुष्टय मिला ॥  
सि० ॥ ४ ॥ गुण इक त्रिश धारी रे, निर्मल पाप ग-  
ली ॥ सि० ॥ ५ ॥ त्रिहुं कालके देवा रे, सब सुख

( २४ )

मेल मिली ॥ सि० ॥ ६ ॥ गुणानंत करीजें रे, वर  
गित वरग वली ॥ सि० ॥ ७ ॥ नत्र एक प्रदेशें रे,  
सब सुख पुंज जिली ॥ सि० ॥ ८ ॥ लोकालोक न  
मावे रे, जिनवर तत्र चली ॥ सि० ॥ ९ ॥ बंधन  
ठेद असंगा रे, पूर्व प्रयोग फली ॥ सि० ॥ १० ॥  
गति करण निदाना रे, सुमति संग जली ॥ सि० ॥  
॥ ११ ॥ हस्तिपाल आरार्थी रे, जिनपद सिद्ध तुली  
॥ सि० ॥ १२ ॥ प्रभु आत्मानंदी रे, पूजत कुमति  
टली ॥ सि० ॥ १३ ॥ काव्यं ॥ अतिशया० ॥ मंत्रः  
॥ ॐ क्लीं श्री पर० ॥ सिद्धाय जला० ॥ य० ॥ इति ॥ १॥

॥ अथ तृतीय प्रवचनपदपूजा प्रारंभः ॥

॥दोहा॥ त्रीजे प्रवचन पूजियें, करी कुमतिसंग दूर ॥  
मिथ्या मत टाली सवे, जन्म मरण दुख चूर ॥ १ ॥  
जाव रोगकी औषधी, अमृतसिंचनहार ॥ जव जय  
ताप निवारिणी, अरिहंत पद फलकार ॥ २ ॥

॥ राग वढंस ॥ प्रवचन पद जवपार उतारे, पू-  
जो जवि मनरंग रे ॥ प्रव० ॥ ए आंकणी ॥ अमृत  
रस जरी ध्यानें, चिदघन रंग रंगील रे ॥ कुमति जा-  
ल सब ढिनकमें जारे, प्रगट अनुभव लील रे ॥  
प्र० ॥ १ ॥ तीनशो साठ तीन ( ३६३ ) मतधारी,

( १५ )

जगमें तिमिर अज्ञान रे ॥ जो जिनवचन सूर तम  
नाशक, ज्ञासक अमल निधान रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ स-  
प्तचंगी नय सप्त सुहंकर, युक्तमान दाय सार रे ॥ ष-  
डचंगी उत्सर्गादिकनी, अडपद्क सम्यककार रे ॥  
प्र० ॥ ३ ॥ प्रवचनाधार संघ जग साचो, जिन पूजे  
जवपार रे ॥ अरिहंत धर्म कथानक अवसर, करत  
प्रथम नमोकार रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ प्रवचन अमृत ज-  
लधर वरसे, जविमन अधिक उद्वास रे ॥ कुमति पंथ  
अंधजन जेते, सूकत जेसें जवास रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥  
संजव नरपति प्रवचन साधी, तीर्थकर पद स्थान रे  
॥ पंच अंग ताली सदगुरुकी, प्रवचन संघ निधान  
रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ आत्म अनुजव रत्न सुहंकर, अच-  
र अनघ पद खान रे ॥ जो जवि पूजे मन तन शुद्धे,  
अरिहंत पदको निदान रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥  
अतिशया० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ॐ श्री पर० ॥ श्रीप्रवचनाय  
जलादिकं० ॥ य० ॥ इति तृतीय प्रवचनपद पूजा ॥३॥

॥ अथ चतुर्थ सूरिपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ चोथे पद सूरी नमो, चरण करण पद  
धार ॥ सारण वारण नोदना, प्रतिनोदन करतार  
॥१॥ षट् त्रिंशत गुण शोचता, संपत षट् पंचास ॥

( २६ )

मेढी सम जिनशासनें, जवि पूजे सुखराश ॥ २ ॥

॥ अपने रंगमें रंग दे, हेरी हेरी लावा, अपने रंगमें रंग दे ॥ ए आंकणी ॥ पांच आचार अखंभित पावे, जन्म मरण दुख जंग दे ॥ हेरी० ॥ १ ॥ पंच प्रस्थान जे मंत्र रायकों, स्मरण करे मन रंग दे ॥ हेरी० ॥ २ ॥ आठ प्रमाद तजे उपदेशें, शिवरमणी सुख मंग दे ॥ हेरी० ॥ ३ ॥ चार अनुयोग सुधारस धारे, धरम करन उमंग दे ॥ हेरी० ॥ ४ ॥ सातहि विकथा दूर निवारी, मोह सुन्नट संग जंग दे ॥ हेरी० ॥ ५ ॥ श्रुतके सातो अंग रंगीले, मुज हृदयेमें टंक दे ॥ हेरी० ॥ ६ ॥ पुरुषोत्तम नृप जिनपद लीनो, आत्मराज शिव चंग दे ॥ हेरी० ॥ ७ ॥ काव्यम् ॥ अति श० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्री पर० ॥ श्रीसूरये जवा दि० यजा० ॥ इति चतुर्थं सूरिपद पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम थिविर पद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ परम संगी रंगी नहि, ज्ञायक शुद्ध स्वरूप ॥ जवि जन मन थिर करनकों, जय जय थिविर अनूप ॥ १ ॥

॥ तुमरी मध्य हिंडुस्थानी ॥ मत जानां उनमार्ग तनू मन, दाखत सुगुरु सुगुण वतियां रे ॥ ए देशी ॥

॥ थिविर सुहंकर पदकज पूजी, तीर्थकर पद मु

( १७ )

ख गतियां रे ॥ थि० ॥ १ ॥ ङिगमिग ङिगमिग मन  
चंचल ह्य, धरम करे फिर चित्त रतियां रे ॥ थि० ॥  
॥ २ ॥ सूत्र थिविर वय व्रत परिणामें, जाने समवा-  
यांग वतियां रे ॥ थि० ॥ ३ ॥ साठ वरस व्रत वर-  
स वीसमे, थिर परिचित शुद्ध बुद्ध मतियां रे थि०  
॥ ४ ॥ दशविध अंग तीसरे वरने, थिविर गृहे इह  
जिन व्रतियां रे ॥ थि० ॥ ५ ॥ वंदन पूजन नमन  
करन मति, नक्ति करे शुद्ध पुण्य रतियां रे ॥ थि०  
॥६॥ पद्मोत्तर नृप इह पद सेवी, आत्म अरिहंत प-  
द वतियां रे ॥ थि० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ अतिश० ॥ मंत्रः  
॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० ॥ थिविराय ज० ॥ य० ॥ इति ॥५॥

॥ अथ षष्ठपाठकपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ स्यादवाद नयपंथमें, पंचानन बल पूर ॥  
दुर्नय वादी वृंदने, करे ठिनकमें दूर ॥१॥ पठन करावे  
शिष्यने, स्व पर सत्तातूर ॥ मिथ्या तिमिर विनाशनें,  
जय जय पाठक सूर ॥ २ ॥

॥ राग खमाच ॥ वीतरागकों देख दरस, डुविधा  
मोरी मिट गइ रे ॥ वि० ॥ ए देशी ॥ पाठक पद सु-  
ख चेन देन, वस अमीरस जीनो रे ॥ पाठक० ॥  
ए आंकणी ॥ स्वपर रूप विकासीचंद, अनुभव सुर

( १७ )

तरु केरो कंद ॥ स्यादवाद मुख उचरे ठंद, जिन व-  
चरस पीनो रे ॥ पा० ॥ १ ॥ कुमति पंथतम नाशक  
सूर, सुमति कंद घनवर्द्धन पूर ॥ दे उपदेश संत रस  
चूर, अघ सब ह्य कीनो रे ॥ पा० ॥ २ ॥ त्रीजे ज-  
व शिवरमणी चंग, चरण करण उपदेशक रंग ॥ कर्म  
निकंदन करण जंग, सुर असुर पूजीनो रे ॥ पा० ॥  
॥ ३ ॥ ह्य गय वृषज सिंह सम कीन, उपेंद्र इंद्र च-  
क्री दिन इन ॥ चंद्र चंकारी उपमा दीन, नग मेरु करी-  
नो रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ जंबू सीतासरित वखान, चरम  
जलधि तिम गुण मणि खान ॥ षोडश उपमा करी  
विधान, बहुश्रुत जस द्वीनो रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ अवगु-  
ण चौदे दूर करीन, पन्नर गुणकारी शिष्य पीन ॥ सर-  
स वचन जिम तंत्री वीन, निज गुण सब चीनो रे  
॥ पा० ॥ ६ ॥ महेंद्रपाल पद सेवी सार, तीर्थकर  
पद द्वीनो सार ॥ मदन जरमकों जार जार, आत्म-  
रस जीनो रे ॥ पा० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ पाठकाय ज० ॥ य० ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम साधुपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ तजी विज्ञाव स्वज्ञावता, रमता समता सं-  
ग ॥ विशदानंद स्वरूपता, लाग्यो अविहड रंग ॥ १ ॥



( १९ )

माने जग त्रिहुं कालमें, मुनि कहियें तस नाम ॥  
साधे शुद्धानंदता, साधु नाम अजिराम ॥ १ ॥

॥ इंयेजी बाजानी चाल ॥ मुणिंद चंद ईश मेरे,  
तार तार तार ॥ ज्ञानके तरंग जंग, सात जास कार  
॥ मुणिं० ॥ १ ॥ संतके महंत मुनि, साध ऋषि धा-  
र ॥ यति व्रती संजमी हे, जगत्को आधार ॥मु०॥  
॥ २ ॥ नवविध जावलोच, केश दशकार ॥ अनंग  
रंग जंग संग, सुमतिचंग नार ॥ मुणिं० ॥ ३ ॥ सप्त  
चाह्नी दोष टाह्नी, खेत हे आहार ॥ सातवीश गूण  
धार, आतमा उजार ॥ मु० ॥ ४ ॥ पंचही प्रमाद  
के, कद्धोल लोल जार ॥ संसारनीरनिधि पोत, ज्यो-  
ति ज्ञानसार ॥ मुणिं० ॥ ५ ॥ पार करे संत अंत,  
कर्मका निहार ॥ ब्रह्मचर्य धार वाड, नवरंग लार ॥  
मुणिं० ॥ ६ ॥ वीरजद्र साधु सेव, जिनपद सार ॥  
आतम उमंग रंग, कुगुरु संग ठार ॥ मुणिं० ॥ ७ ॥  
काव्यं ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ॥ ॐ श्री परम० ॥  
साधवे जला०॥॥य०॥ इति सप्तम साधुपद पूजा ॥७॥

॥ अथाष्टम ज्ञानपद पूजा प्रारंभः ॥

॥दोहा॥निजस्वरूपके ज्ञानसें, परसंग संगत ठार ॥  
ज्ञान आराधक प्राणिया, ते उतरे जव पार ॥ १ ॥

( ३० )

॥ लागी लगन कहो कैसें बूटे, प्राणजीवन प्रचु  
प्यारेसें ॥ ला० ॥ ए देशी ॥

॥ राग जेरवी ॥ ज्ञान सुहंकर चिदघन संगी, रंगी  
जिनमत सारेमें ॥ रंगी० ॥ ज्ञान०॥१॥ पांच एकावन  
जेद ज्ञानके, जडता जग जन टारेमें ॥ जड० ॥ ज्ञा-  
न० ॥ २ ॥ जह् अजह् विवेचन कीनो, कुमति रंग  
सब ठारेमें ॥ कु० ॥ ज्ञान० ॥ ३ ॥ प्रथम ज्ञानने  
पठी अहिंसा, करम कलंक निवारेमें ॥ कर० ॥  
ज्ञान० ॥ ४ ॥ सदसदजाव विकाशी ज्ञानी, दुर्नय  
पंथ विसारेमें ॥ दुर्न० ॥ ज्ञान० ॥ ५ ॥ अज्ञानीकी  
करणी एसी, अंक विना शून्य सारेमें ॥ अंक० ॥  
ज्ञान० ॥ ६ ॥ मति श्रुत अवधि मनःपर्यव हे, केव-  
ल सर्व उजारेमें ॥ केव० ॥ ज्ञान० ॥ ७ ॥ अज्ञानी  
वर्ष एक कोटिमें, करम निकंदन जारेमें ॥ कर० ॥  
ज्ञान० ॥ ८ ॥ ज्ञानी श्वासोद्वास एकमें, इतने करम  
विकारेमें ॥ इत० ॥ ज्ञान० ॥ ९ ॥ जरतेश्वर मरुदेवी  
माता, सिद्धि वरे दुःख जारेमें ॥ सि० ॥ ज्ञान ॥  
॥ १० ॥ देशविराधक सर्वाधारक, जगवती वीर उ-  
जारेमें ॥ ज० ॥ ज्ञान० ॥ ११ ॥ जयंत नरेश्वर यह  
पद साधी, आतम जिनपद धारेमें ॥ आ० ॥ ज्ञा-

( ३१ )

न० ॥ ११ ॥ काव्यं ॥ अतिशया० ॥ मंत्रः ॥ ॐ  
ॐ श्री परम० ॥ ज्ञानाय जला० ॥ य० ॥ इति॥॥॥

॥ अथ नवम दर्शनपद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा॥ तत्त्व पदारथ नव कहे, महावीर जगवा-  
न ॥ जो सरदे सझावसें, सम्यग्दर्शी जान ॥ १ ॥  
श्रद्धा विण नहि ज्ञान हे, तद विण चरण न होय॥  
चरण विना मुक्ती नही, उत्तरज्जायणे जोय ॥ २ ॥

॥ निशिदिन जोवुं वाटडी, घेर आवो ढोला ॥ ए  
देशी ॥ राग परज ॥ दर्शन पद मनमें वस्यो, तब  
सब रंग रोला ॥ जगमें करणी लाख ठे, एक दर्श  
अमोला ॥ द० ॥ १ ॥ दर्शन विण करणी करी, एक  
कोडी न मोला ॥ देव गुरु धर्म सार हे, इनका क्या  
मोला ॥ द० ॥ २ ॥ दर्शन मोहनी नाशसें, अनुज-  
व रस घोला ॥ जिन दर्शन पूजन करे, एही हर्ष  
कह्योला ॥ द० ॥ ३ ॥ सम संवेग निवेदता, आस्ति  
करुणा तंबोला ॥ इन लक्षणसें मानियें, समकित  
रस चोला ॥ द० ॥ ४ ॥ एक मुहूरत फरसीयें, दर्श-  
न सुख मोला ॥ निश्चय मुक्ती पामियें, जिनवर एम  
बोला ॥ द० ॥ ५ ॥ इग डुग ती चउ सर दसे, सतसठ  
जेद तोला ॥ दर्शन पायो सिज्जंजवें, देखी प्रतिमा

( ३१ )

अमोला ॥ द० ॥ ६ ॥ हरिविक्रम नृप सेवना, अंतर  
दृग खोला ॥ आतम अनुभव रंगमें, मिटे वनका जो-  
ला ॥ द० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ अतिशया० ॥ मंत्रः ॥ ॐ  
ॐ श्री परम० ॥ दर्शनाय जला० ॥ य० ॥ इति॥ए॥

॥ अथ दशम विनयपदपूजा प्रारंभः ॥

॥दोहा॥गुण अनंतकोकंद हे, विनय चुवन सिंगार ॥  
विनयमूल जिनधर्म हे, विनयिक धन अवतार॥ १॥  
पांच जेद दल तेरसा, बावन बासठ मान ॥ आग-  
ममें वीनय तणा, जेद कह्या जगवान ॥ २ ॥

॥ एकेली जानसें, में तो दुःख सह्योरी ॥ ए देशी॥  
॥ सखी में तो विनय पिठाना री, अनंतें कालसें ॥  
स० ॥ अ० ॥ १ ॥ तीर्थकर सिद्ध कुलगणसंघा, किरि-  
या धर्म सुज्ञानारी ॥ स० ॥ अ० ॥ २ ॥ ज्ञानी सूरी  
थिविर पाठक, गणी पद तेरा विधाना री ॥ स० ॥  
अ० ॥ ३ ॥ अनाशातना जक्ति सुहंकर, अतिमान  
गुण गाना री ॥ स० ॥ अ० ॥ ४ ॥ दोय सहसने  
चिहुत्तर अधिकें, वंदन देव विधाना री ॥ स० ॥  
अ० ॥ ५ ॥ चारसो बावन गुरुवंदन विधि, विनयी  
जन चित्त आनां री ॥ स० ॥ अ० ॥ ६ ॥ जिन  
वंदन हित अति जारी, दुर्गति नाश करनां री ॥

स०॥अ०॥ ७ ॥ श्रद्धा चासन तत्त्व रमणता, विनयी  
कार जगानां री ॥ स० ॥ अ० ॥ ८ ॥ धन्ना एह  
पद विधिंशुं सेवी, आत्मरंग जरानां री ॥स०॥अ०॥  
ए॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः॥ ॐ ह्रीं श्रीं पर०॥  
विनयाय ॥ जला० ॥ यजाम० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथैकादश चारित्रपद पूजा प्रारंभः ॥

॥दोहा॥ चरण शरण जवजल तरण, चरण शरण  
सुख सार ॥ रंक महंत करे सही, सुरवर सेवाकार ॥१॥  
तीन जगतपति पद दिये, इंद्रादिक गुण गाय ॥ क-  
क्षिमल पंकपखारना, जय जय संयम राय ॥ २ ॥

॥ लगीलो नाजिनंदनशुं, लगीलो ॥ ए देशी ॥  
॥ राग सोरठ ॥ चरण पद मनरंग ॥ रे जीया ॥ च०॥  
ए आंकणी ॥ आठ कर्मका संचकों जे, रिक्त करे ज-  
य जंग ॥ च० ॥ चारित्र नाम निरुक्तें मान्यो, शिव  
रमणीको संग ॥ रे जी० ॥ च० ॥ १ ॥ षट्खंरुकेरुं  
राज्य जेहनें, रमणी जोग उतंग ॥ चक्री संजम रसमें  
लीनो, चिद्घन राज अजंग ॥ रे जी० ॥ च० ॥ २ ॥  
बारे कषाय जरे जब कीनी, प्रगटे संयम चंग ॥  
आठ कषाय गये अणुविरती, चारित्र मोह विरंग ॥  
रे जी० ॥ च० ॥ ३ ॥ वर्ष संयमके सुखकी श्रेणी,

अनुत्तर सुर सुख चंग ॥ तत्त्व रमणता संयम विण  
नहि, समर अमर अनंग ॥ रे० जी० ॥ च० ॥ ४ ॥  
वरुण देव संयम पद साधी, अरिहंत रूप असंग ॥  
आतमानंदी सुरनर वंदी, प्रगढ्यो ज्ञान तरंग ॥ रे  
जी० ॥ च० ॥ ५ ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॐ ह्रीं  
श्रीं परम० ॥ चारित्राय जला० ॥ यजा० ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादश ब्रह्मचर्यपद पूजा ॥

॥दोहा॥कामकुंज सुरतरु जणी,सब व्रत जीवन सा-  
रा॥कामित फलदायक सदा, जव दुख जंजनहार॥१॥  
तारागणमें उरुपति, सुरगणमें जिम इंद्र ॥ विरति  
सकल मुख मंरुना, जय जय ब्रह्म थिरिंद ॥ २ ॥

॥ मध्यरात्रि समयकी, श्याम नेक दया मोसें न  
करी, नेम नेक० ॥ ए देशी ॥

॥ राग सोरठी ॥ श्याम ब्रह्म सुहंकर लख री ॥  
श्याम०॥ए आंकणी॥ कुमति संग सब शुधबुध चूढी,  
अनुजव रस अरु चख री ॥ श्याम० ॥ १ ॥ नव वा-  
डें शुद्ध ब्रह्म आराधे, अजर अमर तुं अलख री ॥  
श्याम० ॥ २ ॥ औदारिक सुर कामजालसें, अपने  
आपकों रख री ॥ श्याम० ॥ ३ ॥ सिंहादिक पशु  
जय सब नाशे, ब्रह्मचर्य रस चख री ॥ श्याम० ॥

॥ ४ ॥ विजयशेठ विजया गुणवंती, सुदर्शन काम  
कख री ॥ श्याम० ॥५॥ दशमे अंगें बत्रीश उपमा,  
ब्रह्मचर्यकी दख री ॥ श्याम० ॥६॥ आतम चंद्रवर्म  
नरवर ज्युं, अरिहंत पद सुख अख री ॥ श्याम०  
॥७॥ काव्यम् ॥ अतिशया० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
परम० ॥ ब्रह्मचर्याय जला० ॥ यजाम० ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ त्रयोदश क्रियापद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ चिद् विलास रस रंगमें, करे क्रिया जवि चं-  
ग ॥ करम निकंदन यश जरे, उठखे ज्ञान तरंग ॥ १ ॥  
आगम अनुसारी क्रिया, जिनशासन आधार ॥ प्रवर  
ज्ञान दर्शन लहे, शिवरमणी जरतार ॥ २ ॥

॥ फलवर्द्धी पारसनाथ, प्रचुकों पूजो तो सही ॥  
ए देशी ॥ राग माढ ॥ थारी गइ रे अनादि निंद,  
जरा टूक जोवो तो सही ॥ जोवो तो सही मेरा चे-  
तन जोवो तो सही ॥ थारी० ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञान  
संग किरिया दुःखहरणी, जोवो तो सही ॥ मेरा  
चेतन नेवो तो सही ॥ एह धर्म शुक्ल शुद्ध ध्यान  
हृदयमें, प्रोवो तो सही ॥ मे० ॥ था० ॥ १ ॥ आर्त्त  
रौद्रनी पणवीस क्रिया, खोवो तो सही ॥ मे० ॥  
अनुभव समरस सार जरा तुम्म, टोवो तो सही ॥

मे० ॥ था० ॥ १ ॥ अड दिछी समता जोगनी कि  
रिया, होवो तो सही ॥मे०॥ प्रथम चार तजी चार  
ग्रही पर, होवो तो सही ॥ मे० ॥ था० ॥ ३ ॥ स-  
मकितकी करणी दुःखहरणी, होवो तो सही ॥मे०॥  
दुक दूर नय पंथ विहार ज्ञान रस, गावो तो  
सही ॥ मे० ॥ था० ॥ ४ ॥ अंतर तत्व विषय म-  
न प्रीति, होवो तो सही ॥ मे० ॥ एह ज्ञान क्रिया  
निज गुण रंग राची, होवो तो सही ॥ मे० ॥था०॥  
५॥ अशुभ ध्याननां धानक त्रेशठ, होवो तो सही  
॥ मे० ॥ पुण्यानुबंधी पुण्य बीज दुक, होवो तो  
सही ॥ मे० ॥ था०॥ ६ ॥ क्रोध मान माया जडता  
संग, होवो तो सही ॥ मे०॥ एह हरिवाहन आत-  
म रस चाखी, होवो तो सही ॥ मे० ॥ था० ॥ ७ ॥  
काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ क्रि  
यायै फ० ॥य०॥ इति त्रयोदश क्रिया पद पूजा ॥१३॥  
॥ अथ चतुर्दशतपपद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ उपशम रस युत तप जलुं, काम निकंदन  
हार॥ कर्म तपावे चीकणां, जय जय तप सुखकार ॥१॥

॥ राग बिहाग ॥ युं सुधरे रे सुज्ञानी, अनघ त-  
प ॥ युं० ॥ ए आंकणी ॥ कर्म निकाचित ठिनकमें



जारे, निदंज तप मन आनी ॥ अ० ॥ १ ॥ अर्जुन  
 माली दृढप्रहारी, तपशुं धरे शुच ध्यानी ॥ अ० ॥  
 ॥ २ ॥ लाख अग्यारह एंशी हजारह, पंच सय  
 गिने ज्ञानी ॥ अ० ॥ ३ ॥ इतने मास उमंग तप  
 कीनो, नंदन जिनपद ठानी ॥ अ० ॥ ४ ॥ संवत्सर  
 गुणरत्न पीनो, अतीमुक्त सुख खानी ॥ अ० ॥ ५ ॥  
 चौद सहस मुनिवरमें अधिको, धन धन्नो जिनबानी  
 ॥ अ० ॥ ६ ॥ कनककेतु तप शुध पद सेवी, आतम  
 जिनपद दानी ॥ अ० ॥ ७ ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥  
 मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ तपसे जला० ॥ य० ॥ १४ ॥

॥ अथ पंचदश दानपदपूजा प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥ दानें जवसंकट मिटे, दानें आनंद पूर ॥  
 दानें जिनवर पद लहे, सकल जयंकर चूर ॥ १ ॥ अ  
 जय सुपातर दान दे, निस्तरिया संसार ॥ मेघ सुमु-  
 ख वसुमति धना, कहत न आवे पार ॥ २ ॥

रच्यो सिरि वृंदावन, रास तो गोविंद रच्यो ॥  
 ए देशी ॥ राग जंगलो ॥ दान तो अजंग दीजें, मन  
 धरी रंग ॥ दान तो ० ॥ ए आंकणी ॥ खान तो अ-  
 मर अज, सुख तो अजंग ॥ गौतम रतनसम, पात्र  
 सुरंग ॥ दान तो ० ॥ १ ॥ कनक समान मुनि, पात्र

उत्तंग ॥ देशविरति पात्र रौप्य, मध्यम सुमंग ॥ दा० ॥  
 २ ॥ समदर्शी जीव मानो, जघन तरंग ॥ कांस्य  
 पात्र पात्रसम, सुख दे निरंग ॥ दा० ॥ ३ ॥ शालिज-  
 द्र कृत पुत्रा, धन्ना शुचचंद ॥ दानसें अनंत सुख,  
 कहत जिणंद ॥ दा० ॥ ४ ॥ दानसें हरिवाहन ली-  
 नो, जिनपद संग ॥ आतम आनंद कंद, सहज उमं-  
 ग ॥ दा० ॥ ५ ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥ ॐ  
 ॐ श्री पर० ॥ दानाय जला० ॥ यजाम० ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश वैयावृत्यपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ वेयावच्च पद सोलमें, अखिल विमल गुण  
 खान ॥ ए अप्रतिपाती खरो, आगमकथित निदान ॥  
 ॥ १ ॥ जिनसूरी पाठक मुनि, बालक वृद्ध गिलान ॥  
 तपी संघ जिनचैत्यनुं, वेयावच्च विधान ॥

॥ गिरनारीकी पहाडी पर केसें गुजरी ॥ गिर० ॥  
 ए देशी ॥ राग तुमरी ॥ शुद्ध वेयावच्च करि जिनपद  
 वर री ॥ शुद्ध० ॥ ए आंकणी ॥ तीर्थकर केवलि म-  
 नपर्यव, अवधि चतुर्दश पुवधरी री ॥ शुद्ध० ॥ १ ॥  
 दशपूर्वी उत्कृष्ट चरणधर, लब्धिवंत ए जिन सगरी  
 ॥ शुद्ध० ॥ २ ॥ जिनमंदिर जिन चैत्य करावे, पूजा  
 करे मन तनु सुधरी ॥ शुद्ध० ॥ ३ ॥ दशमे अंगें जि-

( ३ए )

नवर ज्ञाखे, कुमति कुसंग सब डुर जगरी ॥ शुद्ध ०  
॥ ४ ॥ नवपद शेष सूरीश्वर आदि, वैयावृत्यकर उ-  
ठि जगरी ॥ शुद्ध ० ॥ ५ ॥ सतपंच मुनिनुं वैयावृत्त  
करीने, जरत बाहुल शिव मगरी ॥ शुद्ध ० ॥ ६ ॥  
नृप जिमूतकेतु पद साधी, आतम जिन पद रस ग-  
गरी ॥ शु ० ॥ ७ ॥ काव्यम् ॥ अतिश ० ॥ मंत्रः ॥ ॐ  
॥ श्री ॥ परम ० वैयावृत्याय जला ० ॥ यजा ० ॥ १६ ॥

॥ अथ सप्तदश समाधिपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ नीजातम गुण रमणता, इंद्रिय तजी विकार-  
र ॥ थिर समाधि संतोषमें, जव दुःखजंजनहार ॥ १ ॥

॥ मानो ने चेतनजी मारी वात मानो ने ॥ ए देशी ॥

॥ राग खमाच ॥ राचो रे चेतनजी मन शुद्ध लाग ॥

राचो ० ॥ धारो धारो समाधि केरो राग ॥ राचो ० ॥

॥ १ ॥ या संग नाश कह्यो जववनको, अब क्युं स-

रको जाग ॥ राचो ० ॥ २ ॥ द्रव्यसमाधि जाव स-

माधि, सुमति केरो सुहाग ॥ राचो ० ॥ ३ ॥ अशन

वसनसें जक्ति संघकी, द्रव्यसमाधि अथाग ॥

॥ राचो ० ॥ ४ ॥ सारण वारण चोयण करनी, दु-

तिय समाधी, जाग ॥ राचो ० ॥ ५ ॥ सकल संघकूं

दुविध समाधि, निपजावे महाजाग ॥ राचो ० ॥ ६ ॥

पंच सुमति तिन गुप्ति धरे नित्त,निशिदिन धरत वि-  
 राग ॥ राचो० ॥ ७ ॥ चार निक्षेप नय सप्तजंगी,  
 कारण पंच निराग ॥ राचो० ॥ ८ ॥ चार प्रमाण  
 द्रव्य षट मानें, नव तत्त्व दिखमें चिराग ॥ राचो०  
 ॥ ९ ॥ सामायिक नव द्वार विचारी, निज सत्ताको  
 विजाग ॥ राचो० ॥ १० ॥ पुरंदर नृप ए पद सेवी,  
 आतम जिनपद माग ॥ राचो० ॥ ११ ॥ काव्यम् ॥  
 अतिश० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्री परम० ॥ समाधये  
 ज० ॥ य० ॥ इति सप्तदश समाधि पद पूजा ॥

॥ अथाष्टादशाज्ञिनवज्ञानपदपूजाप्रारंभः ॥

दोहा॥ज्ञान अपूरव ग्रहण कर, जागे अनुभव रंग॥  
 कुमति जाल सब जार कें, उठले तत्त्वतरंग ॥ १ ॥  
 पद अठारमे पूजियें, मन धरि अधिक उमंग ॥ ज्ञान  
 अपूरव जिन कहे, तजी कुगुरुको संग ॥ २ ॥  
 मन मोह्या जंगलकी हरणीने ॥ मन० ॥ ए देशी ॥  
 जवि वंदो, अपूर्व ज्ञानतरणीने ॥ जवि० ॥ ए आं-  
 कणी ॥ कुमति घूक सब अंध हुये हें, चूले जडमति  
 करणीने ॥ जवि० ॥ १ ॥ ज्ञान अपूरव जबही प्रगटे,  
 शुरू करे चित्तधरणीने ॥ जवि० ॥ २ ॥ निर्युक्ति शुरू  
 टीका चूर्णी, मूल ज्ञाप्य सुख चरणिने ॥ जवि० ॥

॥ ३ ॥ संप्रदाय अनुजवरस रंगें, कुमति कुपथ वि-  
हरणीने ॥ जवि० ॥ ४ ॥ सदगुरुकी ए ताक्षिका नी-  
की, रतन संडुख उद्धरणीने ॥ जवि० ॥ ५ ॥ इन वि-  
न अर्थ करे सो तस्कर, काल अनंता मरणीने ॥ ज-  
वि० ॥ ६ ॥ सम्मति कर्म ग्रंथ रत्नाकर, वेद ग्रंथ  
दुःख हरणीने ॥ जवि० ॥ ७ ॥ द्वादशार वली अंग  
उपांग, सप्तजंग शुद्ध वरणीने ॥ जवि० ॥ ८ ॥ इत्या-  
दिक जवि ज्ञान अपूरव, पठन करे धरे चरणीने ॥  
जवि० ॥ ९ ॥ सागरचंद जिनपद पायो, आतम शिव बधु  
परणीने ॥ जवि० ॥ १० ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं प० ॥ अजिनवज्ञानपदाय ज० ॥ य० ॥

॥ अथैकोनविंशति श्री श्रुतपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ पाप तापके हरणकों, चंदन सम श्रुत ज्ञा-  
न ॥ श्रुत अनुजव रस राचियें, माचियें जिनगुण तान  
॥ १ ॥ इगुणवीश पद पूजियें, जिनवर वचन अजंग ॥  
तीर्थकर पद जवि लहे, बार कुमतिको संग ॥ २ ॥

॥ श्रीराधे राणी ॥ दे नारो ने बांसरी हमारी ॥  
श्रीराधे० ॥ ए देशी ॥ राग कढ्याण ॥ श्री चिदानंद  
विनारो ने, कुमति जो मेरी ॥ श्री० ॥ ए आंकणी ॥  
दुषम कालमें कुमति अंधेरो, प्रगट करे सब चोरी

( ४२ )

॥ श्री० ॥ १ ॥ बत्तीस दोष रहित श्रुत वांचे, आठ  
गुणें करी जोरी ॥ श्री० ॥ २ ॥ अरिहंत गणधर  
जाषित नीको, श्रुत केवली बल फोरी ॥ श्री० ॥ ३ ॥  
प्रत्येक बुद्ध दश पूरवधर, श्रुत हरे जवकों री ॥ श्री०  
॥ ४ ॥ आठ आचार जो काळादिक हे, साधे कर-  
मनी चोरी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चारोहि अनुयोग गुरुग-  
म वांचे, दूटे कुपंथनी दोरी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चौद  
जेद श्रुत वीश जेद हे, अंग पयन्नाको री ॥ श्री० ॥  
॥ ७ ॥ रत्नचूड नृप ए पद सेवी, आतम जिनपद  
हो री ॥ श्री० ॥ ८ ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ श्रुताय जल्ला० ॥ य० ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ अथ विंशति तीर्थपद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ जिनमतकी परजावना, करे प्रजावक आठ ॥  
श्रावक धन खरची करे, रथयात्रादिक ठाठ ॥ १ ॥ प्राव-  
चनी अरु धर्मकथी, वाद निमित्त सुज्ञान ॥ तपी  
सिद्ध विद्या कवि, आठ प्रजावक जान ॥

॥ राग पीडू ॥ तीर्थ उजारो अब करीयें, जविक  
वृंद ॥ दाख्यो रे जिन पद, आनंद नरे री ॥ तीर्थ० ॥  
ए आंकणी ॥ तीर्थ प्रकार दोय, थावर जंगम जोय ॥  
सिद्धगिरि आदि जोय, दर्श करे री ॥ ती० ॥ २ ॥

( ४३ )

शिखर समेत चंपा, पावापुरी दुःख कंपा ॥ अष्टापद  
रेवत, जिनंद शिव वरे री ॥ ती० ॥ २ ॥ इत्यादि  
जिनस्थान, जनम विरत ज्ञान ॥ समज सुजान ठान,  
ऋक्ति खरे री ॥ ती० ॥ ३ ॥ थावर तीर्थ रंग, मन  
धरी अति चंग ॥ संघ काढी महानंद, धर्मशुं धरे  
री ॥ ती० ॥ ४ ॥ संघकी ऋक्ति करी, जेजेकार जग  
करी ॥ पावत प्रजावनासें, उन्नति करे री ॥ ती० ॥ ५ ॥  
जरत सागर लेन, महापद्म हरीषेण ॥ संप्रति कुमारपा-  
ल, वस्तुपाल नरे री ॥ ती० ॥ ६ ॥ आतम आनंद  
पूर, करम कलंक चूर ॥ मेरुप्रज्ञ जिन पद, सुखमें वरे  
री ॥ ती० ॥ ७ ॥ काव्यम् ॥ अति० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ॐ श्रीं प-  
रम० ॥ तीर्थेऽन्यो जलादिकं यजा० ॥ इति विंश० ॥ १२० ॥  
॥ अथ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ शुद्ध मन करो रे आनंदी, विंशति पद ॥ शुद्ध० ॥ ए  
आंकणी ॥ विंशति पद पूजन करी विधिंशुं, उजमणुं क-  
रो चित्त रंगी ॥ विं० ॥ १ ॥ ए सम अवर न करणी जगमें,  
जिनवर पद सुख चंगी ॥ विं० ॥ २ ॥ तप गढ गगनमें  
दिनमणि सरिसो, विजयसिंह विरंगी ॥ विं० ॥ ३ ॥ सत्य  
कपूरदामा जिन उत्तम, पद्मरूप गुरु जंगी ॥ विं० ॥ ३ ॥ की-  
र्तिविजय गुरु समरस जीनो, कस्तूरमणि हे निरं-

( ४४ )

गी ॥ विं० ॥ ५ ॥ श्री गुरु बुद्धिविजय महाराजा,  
मुक्तिविजयगणि चंगी ॥ विं० ॥ ६ ॥ तस लघु  
त्राता आनंदविजयो, गाय विंशति पद चंगी॥विं०॥  
॥ ७ ॥ खंयुग अंक इंद्रु (१९४०) वत्सरमें, वींकानेर  
सुरंगी ॥ विं० ॥ ८ ॥ आत्माराम आनंद पद पूजो,  
मन तन होय एक रंगी ॥ विं० ॥ ९ ॥ इति कलश  
संपूर्ण ॥ इति मुनिराज श्रीआत्मारामजी आनंदवि-  
जयजीकृत विंशति स्थानकपदपूजा समाप्ता ॥

॥ अथ ॥

न्यायांज्ञोनिधि महाराज श्रीआत्मारामजी  
आनंदविजयजी कृत

॥ सत्तर जेदी पूजा ॥

॥ दोहा ॥ सकल जिणंद मुणिंदनी, पूजा सतर  
प्रकार ॥ श्रावक शुद्ध ज्ञावें करे, पामे जवनो पार  
॥ १ ॥ ज्ञाता अंगें ड्रौपदी, पूजे श्री जिनराज ॥  
रायपसेणि उपांगमें, हित सुख शिवफल ताज ॥२॥  
न्हवण विलेपन वस्त्रयुग, वास फूल वरमाल ॥ वर-  
ण चुन्न ध्वज शोचती, रत्नाजरण रसाल ॥ ३ ॥ सु-



मनसगृह् अति शोचतुं, पुष्पधरा मंगलीक ॥ धूप  
गीत नृत्य नादशुं, करत मिटे सब चीक ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ शुचितनु वदन वसन धरी, जरे सुगंध  
विशाल ॥ कनक कलश गंधोदकें, आणी जाव विशा-  
ल ॥ १ ॥ नमत प्रथम जिनराजकुं, मुख बांधी मु-  
खकोश ॥ जक्ति युक्तिसें पूजतां, रहे नरंचक दोषा॥१॥

॥ ढाल ॥ राग खमाच ॥ मान तुं काहे ये करता ॥  
ए देशी ॥ मान मद मनसें परहरता, करी न्हवण जग-  
दीश ॥ मा० ॥ ए आंकणी ॥ समकितनी करनी  
दुःख हरनी, जिन पखाल मनमें धरता ॥ अंग उपंग-  
जिनेश्वर जांखी, पाप परुल जरता ॥ क० ॥ १ ॥  
कंचनकलश जरी अति सुंदर, प्रभु स्नान जविजन क-  
रता ॥ नरक वैतरणी कुमति नासे, महानंद वरता  
॥ क० ॥ २ ॥ काम क्रोधकी तपत मिटावे, मुक्तिपं-  
थ सुख पग धरता ॥ धर्म कटपतरु कंद सींचता, अ-  
मृत घन ऊरता ॥ क० ॥ ३ ॥ जन्म मरणका पंक  
पखारी, पुण्य दशा उदय करता ॥ मंजरी संपद तरु  
वर्द्धनकी, अद्दय निधि जरता ॥ क० ॥ ४ ॥ मनकी  
तप्त मिटी सब मेरी, पदकज ध्यान हृदे धरता ॥

श्रातम अनुन्नव रसमें चीनो, नव समुद्र तरता ॥  
क० ॥ ५ ॥ यह पूजा पढके पंचामृत तथा तीर्थ जल-  
सें जगवानकूं स्नान करावे ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयविलेपन पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ गात्र बुही मन रंगशुं, महके अतिही  
सुवास ॥ गंधकपायी वसनशुं, सकल फले मन आश  
॥१॥ चंदन मृगमद कुंकुमें, जेही मांहे बरास ॥ रत-  
न जफित कचोलीयें, करी कुमतिनो नाश ॥ २ ॥  
पग जानू कर खंधमें, मस्तक जिनवर अंग ॥ जाल  
कंठ उर उदरमें, करे तिलक अति चंग ॥ ३ ॥ पू-  
जक जन निज अंगमें, रचे तिलक शुभ चार ॥ जा-  
ल कंठ उर उदरमें, तस मिटावनहार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ तुमरी ॥ मधुवनमें मेरे सावरीया ॥ ए दे-  
शी ॥ करी विलेपन जिनवर अंगें, जन्म सफल नविजन  
माने ॥ क० ॥ १ ॥ मृगमद चंदन कुंकुम घोली, नव  
अंग तिलक करी थाने ॥ क० ॥ २ ॥ चक्री नवनि-  
धि संपद प्रगटे, करम जरम सब ह्य जाने ॥ क०  
॥ ३ ॥ मन तनु शीतल सब अघ टारी, जिननक्ति  
मन तनु ठाने ॥ क० ॥ ४ ॥ चौसठ सुरपति सुर गिरिरंगें,  
करी विलेपन धन माने ॥ क० ॥ ५ ॥ जागी जा-

ग्यदशा अब मेरी, जिनवर बचन हृदे ठाने ॥ क० ॥  
॥ ६ ॥ परम शिशिरता प्रभु तन करतां, चितसुख अधि-  
धिके प्रगटाने ॥क०॥७॥ आत्मानंदी जिनवर पूजी,  
शुद्ध स्वरूप निज घट आने॥क०॥८॥ यह पढकें विद्वे-  
पन कीजें, प्रभुकुं नव अंगें टीकी दीजें ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ तृतीय वस्त्रयुगलपूजा प्रारंभः ॥

॥ अत्यंत कोमल चंदन चर्चित उज्ज्वल वस्त्रयु-  
गल, रकेबीमें ले कर, एक श्रावक खडा रहे, ओर  
मुखसें इस मुजब पढे सो लिखते हैं ॥

॥ दोहा ॥ वसन युगल अति उज्ज्वलें, निर्मल अ-  
तिही अचंग ॥ नेत्रयुगल सूरी कहे, येही मतांतर सं-  
ग १ ॥ कोमल चंदन चरचरियें, कनक खचित व-  
रचंग ॥ हय पद्वव शुचि प्रभु शिरें, पहेरावे मन रंग  
॥ २ ॥ झौपदि शक्र सुरियाज ते, पूजे जिम जिनचं-  
द ॥ श्रावक तिम पूजन करे, प्रगटे परमानंद ॥ ३ ॥  
पाय लुहण अंग लूहणां, दीजें पूजन काज ॥ सक-  
ल करम मल ह्य करी, पामे अविचल राज ॥ ४ ॥

॥ढाला॥राग देश सोरठ ॥ कुबजाने जादू कारा ॥ए  
देशी॥जिनदर्शन मोहनगारा, जिने पाप कलंक पखारा  
॥ जिन०॥ए आंकणी ॥ पूजा वस्त्रयुगल शुचिसंगें,

( ४७ )

जावना मनमें विचारा ॥ निश्चय व्यवहारी तुम धर्में,  
वरनुं आनंदकारा ॥ जि० ॥ १ ॥ ज्ञान क्रिया शुद्ध  
अनुभव रंगें, करुं विवेचन सारा ॥ स्वपर सत्ता धरुं  
हरुं सब, कर्म कलंक पहारा ॥ जि० ॥ २ ॥ केवल  
युगल वसन आर्चितसें, मांगत हुं निरधारा ॥ कदपतरु  
तुं वंठित पूरे, चूरे करम कठारा ॥ जि० ॥ ३ ॥  
जवोदधि तारण पोत मिला तुं, चिद्घन मंगलकारा ॥  
श्रीजिनचंद जिनेश्वर मेरे, चरण शरण तुम धारा ॥  
जि० ॥ ४ ॥ अजर अमर कर अलख निरंजन, जंज-  
न करम पहारा ॥ आत्मानंदी पापनिकंदी, जीवन  
प्राण आधारा ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थगंधपूजा प्रारंभः ॥

अगर, चंदन, कपूर, कुंकुम, कुसुम, कस्तूरिका-  
का चूर्ण करके कचोली जरके खरा रहे; और  
मुखसें इस मुजब पढे सो लिखतें हैं,

॥ दोहा ॥ चोथी पूजा वासकी, वासित चेतन  
रूप ॥ कुमति कुगंध मिटी गइ, प्रगटे आतमरूप ॥  
॥ १ ॥ सुमती अति हर्षित जइ, लागी अनुभव वा-  
स ॥ वास सुगंधें पूजतां, मोह सुजटको नाश ॥  
॥ २ ॥ कुंकुम चंदन मृगमदा, कुसुम चूर्ण घनसार ॥

( ४ए )

जिनवर अंगें पूजतां, लहियें लाज अपार ॥ ३ ॥

॥ढाल॥अब मोहे मांगरीयां ॥ए देशी॥ चिदानंद  
घन अंतरजामी ॥ अब मोहे पार उतार ॥ जिनं-  
दजी ॥ अब० ॥ ए आंकणी ॥ वासखेपसैं पूजन  
करतां, जनम मरण दुःख टार ॥ जि० ॥ निजगुन  
गंध सुगंधी महके, दहे कुमति मद मार ॥ जि०  
॥ १ ॥ जिन पूजतही अति मन रंगें, जंगे जरम  
अपार ॥ जि० ॥ पुद्गलसंगी दुर्गंध नाठो, वरते ज-  
यजयकार ॥ जि० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन मृगमद मे-  
ढी, कुसुम गंधघनसार ॥ जि० ॥ जिनवर पूजन  
रंगें राचे, कुमति संग सब ठार ॥ जि० ॥ ३ ॥ वि-  
जय देवता जिनवर पूजे, जीवाजिगम मजार ॥ जि०  
श्रावक तिम जिनवासैं पूजे, गृह स्वधर्मनो सार ॥  
जि० ॥ ४ ॥ समकितनी करणी शुज वरणी, जिनग-  
णधर हितकार ॥ जि० ॥ आतम अनुजव रंगरंगी  
ला, वास यजनका सार ॥ जि० ॥ ५ ॥ यह पढकें प्र-  
जु आगें वासहेप उठावे ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम पुष्पारोहणपूजा प्रारंभः ॥

॥ चंद, मचकुंद, दमनक, मरुवा, कुंद, सोवन,  
जाइ, जुइ, चंबेढी, गुलाब, बोलसिरी, इत्यादि सुगंधी

( ५० )

फूल पंच वर्णके रकेबीमें रख कें, इसमुजब पढे ॥

॥ दोहा ॥ मन विकसे जिन देखतां, विकसित  
फूल अपार ॥ जिनपूजा ए पंचमि, पंचमि गति दा  
तार ॥ १ ॥ पंच वरणके फूलसें पूजे त्रिभुवन नाथ ॥  
पंच विघन त्रिवि ह्य करी, साधे शिवपुरसाथ ॥२॥

॥ढाल॥राग कहेरबा॥पास जिनंदा प्रभु, मेरे मन  
वसीया ॥ ए देशी ॥ अर्हन् जिनंदा प्रभु, मेरे मन व-  
सीया ॥ ए आंकणी ॥ मोगर लालगुलाब मालती,  
चंपक केतकी निरख हरसीया ॥ अ० ॥१॥ कुंद प्रियं-  
गु वेद्वि मचकुंदा, बोलसिरी जाइ अधिक दरसीया  
॥ अ० ॥ २ ॥ जल थल कुसुम सुगंधी महके, जिन  
वर पूजन जिम हरि रसीया ॥ अ० ॥ ३ ॥ पंच बा-  
ण पीडे नहि मुऊकों, जब प्रभु चरणें फूल फरसीया  
॥ अ० ॥ ४ ॥ जडता दूर गई सब मेरी, पांच आव-  
रण उखार धरसीया ॥ अ० ॥ ५ ॥ अवर देवकूं  
आक धतूरा, तुमरे पंच रंग फूल वरसीया ॥ अ०  
॥ ६ ॥ जिन चरणें सहु तपत मिटतु हे, आतम  
अनुजव मेघ वरसीया ॥ अ० ॥ ७ ॥ यह पढकें  
पंच वरणके फूल चढावे ॥ इति ॥ ५ ॥ इति पंचम  
पुष्पारोहणपूजा समाप्त ॥

॥ अथ षष्ठ पुष्पमालापूजा प्रारंभः ॥

॥ नाग, पुन्नाग, मरुआ, दमणा, गुलाब, पारुल, मोघरा, सेवंत्री, मोतिया, केतकी, चंपा, चंबेढी, मालती, केवडा, जाइ, जुइ प्रमुख फुलोंकी पंच वरणी सुगंधवाली माला गुंथी हाथमें लेके खडा रहे, ऊर मुखसें इस मुजब पढे.

॥ दोहा ॥ ठठी पूजा जिन तणी, गुंथी कुसुमनी माल ॥ जिन कंठें थापी करी, टालियें दुःख जंजाल ॥ १ ॥ पंच वरण कुसुमें करी, गुंथी जिनगुण माल ॥ वरमाला ए मुक्तिकी, वरे जक्त सुविशाल ॥ ३ ॥

॥ढाल॥ पार्श्वनाथ जपत है जो जन,करम न आवे ताके नेरे ॥ ए देशी ॥ कुसुम मालसें जो जिन पूजे, कर्मकलंक नासे जवि तेरे ॥ कु० ॥ ए आंकणी ॥ नाग पुन्नाग प्रियंगु केतकी, चंपक दमनक कुसुम घने रे ॥ मद्धिका नव मद्धिका शुद्ध जाति, तिलक वसंतिक सब रंग हे रे ॥ कु० ॥ १ ॥ कटप अशोक बकुल मगदंती, पारुल मरुक मालती लेरे ॥ गुंथी पंच वरणकी माला, पाप पंक सब दूर करे रे ॥ कु० ॥ २ ॥ जाव विचारी निजगुण माला, प्रभुसें मागे अरज करे रे ॥ सर्व मंगलकी माला रोपे, बिघन स-

( ५३ )

कल सब साथ जल्ले रे ॥ कु० ॥ ३ ॥ आतमानंदी  
जगगुरु पूजी, कुमति फंद सब दूर जगे रे ॥ पूरण पु-  
ण्ये जिनवर पूजे, आनंदरूप अनूप जगे रे ॥ कु० ॥  
४ ॥ यह पढी प्रभु कंठें फुल माला चढावे ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम अंगीरचनापूजा प्रारंभः ॥

॥ पांच वरणके फुलोंकी केसरके साथ अंगी रचे,  
सो हाथमें लेके खडा रहे, मुखसें इसमुजब पढे.

॥ दोहा ॥ पांच वरणके फूलकी, पूजा सातमि  
मान ॥ प्रभु अंगें अंगी रची, लहियें केवलज्ञान ॥ १ ॥  
मुक्तिवधूकी पत्रिका, वरणी श्री जिनदेव ॥ शुद्ध तत्त्व  
समजे सही, मूढ न जाणे जेव ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ तुम दीनके नाथ दयाल लाल ॥ एदेशी ॥  
तुम चिद्धनचंद आनंद लाल, तोरे दर्शनकी ब-  
विहारी ॥ तु० ॥ १ ॥ पंचवरण फुलोसें अंगीयां,  
विकसे ज्युं केसर क्यारी ॥ तु० ॥ २ ॥ कुंद गुलाब  
मरुक अरविंदो, चंपकजाति मंदारी ॥ तु० ॥ ३ ॥  
सोवनजाती दमनक सोहे, मनतनु तजित विकारी  
॥ तु० ॥ ४ ॥ अलखनिरंजन ज्योति प्रकासे, पुद्गल  
संग निवारी ॥ तु० ॥ ५ ॥ सम्यग् दर्शन ज्ञानस्वरू-  
पी, पूर्णानंद विहारी ॥ तु० ॥ ६ ॥ आतम सत्ता



( ५३ )

जबहीं प्रगटे, तबहीं लहे जवपारी ॥ तु० ॥१॥ यह पढके सुगंध पुष्पें करी जगवानके शरीरें अंगी रचे.

॥ अथाष्टमचूर्णपूजा प्रारंजः ॥

॥ घनसार, अग्र, सेलारस, मृगमद, सुगंधवटी करी हाथमें लेके जिनेश्वरके आगे खडा रहे, ऊर मुखसें इस मुजब पढे, सो लिखते हैं.

॥ दोहा ॥ जिनपति पूजा आठमी, अग्र जला घनसार ॥ सेलारस मृगमद करी, चूरण करी अपार ॥ १ ॥ चुन्नारोहण पूजना, सुमती मन आनंद ॥ कुमती जन खीजे अति, जाग्यहीन मतिमंद ॥ २ ॥

॥ढाल॥राग जोगीयो॥नाथ मेंनुं ठडके,गढ गिरनार तुं गयो री ॥एदेशी॥ करम कलंक दह्यो री,नाथ जिनजजके ॥ ए आंकणी ॥ अग्र सेलारस मृगमद चूरी, अतिघनसार मह्यो री ॥ ना० ॥ १ ॥ तीर्थकर पद शांति जिनेश्वर, जिन पूजीने ग्रह्यो री ॥ ना० ॥ २ ॥ अष्टकरम दल उदजट चूरी, तत्त्वरमणकूं लह्यो री ॥ ना० ॥ ३ ॥ आठोही प्रवचन पालन शूरा, दृष्टि आठ रह्यो री ॥ ना० ॥ ४ ॥ अज्ञासन रमणता प्रगटे, श्रीजिनराज कह्यो री ॥ ना० ॥ ५ ॥ आतम सहजानंद हमारा, आठमी

पूजा चह्यो री ॥ ना० ॥ ६ ॥ यह पाठ पढकें प्रभु-  
जीकों चूरण चढावे ॥ इति अष्टम चूर्ण पूजा ॥ ७ ॥

॥ अथ नवम ध्वजपूजा प्रारंभः ॥

॥ पंच वर्णी ध्वजा, घूघरीयो सहित हेममय दंके  
करी संयुक्त सधवा स्त्री मस्तके लेइ थालमें धरि तीन  
प्रदक्षिणा देइ वासक्षेप करि ध्वजा लेइ खडी रहे.

॥ दोहा ॥ पंचवरण ध्वज शोचती, घूघरिनो घ-  
मकार ॥ हेमदंरु मन मोहनी, लघू पताका सार ॥  
१ ॥ रणऊण करती नाचती, शोजित जिनहर शृंग ॥  
लहके पवन ऊकोरसें, बाजत नाद अचंग ॥ २ ॥  
इंद्राणी मस्तक लई, करे प्रदक्षिण सार ॥ सधवा तिम  
विधि साचवे, पाप निवारणहार ॥ ३ ॥

॥ढाला॥ ध्रुपद ॥ आइ इंद्रनारा॥ए देशी॥आइ सुं-  
दर नार,कर कर सिंगार,ठाढी चैत्यद्वार,मन मोदधार,  
प्रभु गुण विथार, अघ सब क्षय कीनो ॥ आ० ॥  
१ ॥ जोजन उत्तंग, अति सहस चंग, गइ गगन लं-  
घ, जवि हरख संघ ॥ सब जग उत्तंग, पदठिनकमेंली  
नो ॥ आ० ॥ २ ॥ जिम ध्वज उत्तंग, तिम पद अचं-  
ग, जिन जक्ति रंग, जवि मुक्ति मंग, चिद्घन आनं-  
द, समतारस जीनो ॥ आ० ॥ ३ ॥ अब तार नाथ,

मुऊ कर सनाथ, तज्यो कुगुरु साथ, मुऊ पकड हाथ,  
दीनाके नाथ, जिनवच रस पीना ॥ आ० ॥ ४ ॥  
आतम आनंद, तुम चरण वंद, सब कटत फंद,  
ज्यो शिशिर चंद, जिन पठित ठंद ॥ ध्वजपूजन की-  
नो ॥ आ० ॥ ५ ॥ ए पढकें ध्वज चढावे ॥ इति ॥ ए॥

॥ अथ दशमी आचरण पूजा प्रारंभः ॥

॥ पीरोजा, नीलम, लसणीया, हीरा, माणिक, पन्ना  
प्रमुखसैं जडे रत्नाचरण लेश मुखसैं इस मुजब पढे.

॥ दोहा ॥ शोजित जिनवर मस्तकें, रयण मुकुट  
ऊलकंत ॥ जाल तिलक अंगद जुजा, कुंमल अति च-  
मकंत ॥ १ ॥ सुरपति जिन अंगें रचे, रत्नाचरण विशा-  
ल ॥ तिम श्रावक पूजा करे, कटे करम जंजाल ॥ १॥

॥ढाल॥ अंग्रेजी बाजेकी चाल ॥ आनंद कंद पूजतां,  
जिनंद चंद हुं ॥ ए आंकणी ॥ मोति ज्योति लाल हीर,  
हंस अंक ज्युं ॥ कुंमलू सुधारकरण, मुकुट धार तुं ॥  
आ ॥ १ ॥ सूर चंद कुंमलें, शोजित कान डु ॥ अं-  
गद कंठ कंठलो, मुणिंद तार तुं ॥ आ० ॥ २ ॥ जाल  
तिलक चंगरंग, खंगचंग ज्युं ॥ चमक दमक नंदनी, कं-  
दब जीत तुं ॥ आ० ॥ ३ ॥ व्यवहार ज्ञाष्य ज्ञाखियो,  
जिनंद बिंब युं ॥ करे सिंगार फार कर्म, जार जार तुं

॥ आ० ॥ ४ ॥ वृद्धि ज्ञाव आतमा, उमंग कार तुं  
॥ निमित्त शुद्ध ज्ञावका, पियार कार तुं ॥ आ० ॥  
॥ ५ ॥ ए पूजा पढ के नूषण चढावे ॥ इति ॥१०॥

॥ अथैकादश पुष्पगृहपूजा प्रारंभः ॥

॥ सुगंधि फूलोंका घर बनाके हाथमें लेके मुख-  
सें इस मुजब पढे. सो लिखते है.

॥ दोहा ॥ पुष्पघरो मन रंजनो, फूले अद्भुत  
फूल ॥ महके परिमल वासना, रहके मंगलमूल ॥  
शोभित जिनवर बीचमें, जिम तारामें चंद ॥ जवि  
चकोर मन मोदसें, निरखी लहे आनंद ॥ १ ॥

॥ढाल॥ शांति वदन कज देख नयन ॥ ए देशी ॥  
चंदबदन जिन देख नयन मन, अमीरस जिनो रे ॥  
ए आंकणी ॥ राय बेल नव मालिका कुंद, मोघर  
तिलक जाति मचकुंद ॥ केतकी दमणके सरस रंग,  
चंपक रस जिनो रे ॥ चं० ॥ १ ॥ इत्यादिक शुभ फू-  
ल रसाल, घर विरचे मन रंजन लाल ॥ जाली ऊरो-  
खा चितरी शाल, सुरमंरुप कीनो रे ॥ चं० ॥ २ ॥  
गुह्य जुमखां लंबां सार, चंडुआ तोरण मनोहार ॥  
इंद्रचुवनको रंगधार, जव पातक डीनो रे ॥ चं० ॥  
॥ ३ ॥ कुसुमायुधके मारन काज, फूलघरे थापे जि-

नराज ॥ जिम लहियें शिवपुरको राज, सब पातक  
खीना रे ॥ चं० ॥ ४ ॥ आतम अनुभव रसमें रंग,  
कारण कारज समऊ तुं चंग ॥ दूर करो तुम कुगुरु संग,  
नरन्नव फल द्वीनो रे ॥ चं० ॥ ५ ॥ ए पूजा पढकें प्रचुकुं  
फूलघर चढावे ॥ इति एकादश पुष्पगृह पूजा ॥११॥

॥ अथ द्वादश पुष्पवर्षणपूजा प्रारंभः ॥

पांच वरणका सुगंध फूल, हाथमें द्वे के इसमुजब पढे.

॥ दोहा ॥ बादल करी वरषा करे, पंचवरण सुर  
फूल ॥ हरे ताप सब जगतको, जानूदघन अमूल ॥१॥

॥ ढाल ॥ अडिल ठंद ॥ फूल पगर अति चंग रंग  
बादर करी, परिमल अति महकंत मिले नर मधुकरी ॥  
जानुदघन अति सरस विकच अधो बीट हे, वरसे बा-  
धारहित रचे जेम ठीट हे ॥

॥ राग वसंत ॥ साचा साहिब मेरा चिंतामणि  
स्वामी ॥ ए देशी ॥ मंगल जिन नामें, आनंद नविकुं  
घनेरा ॥ ए आंकणी ॥ फूल पगर बदरी ऊरो रे, हेठ  
बीट जिनकेरा ॥ मं० ॥ १ ॥ पीडा रहित ढिग मधु  
कर गुंजे, गावत जिनगुण तेरा ॥ मं० ॥ २ ॥ ताप  
हरे तिहुं लोकका रे, जिन चरणें जस केरा ॥ मं० ॥  
॥ ३ ॥ अशुभ करम दल दूर गये रे, श्रीजिन नाम

रटेरा ॥ मं० ॥ ४ ॥ आतम निर्मल जाव करीने, पू-  
जे मिटत अंधेरा ॥ मं० ॥५॥ ए पढकें फूल उठावे ॥

॥ अथ त्रयोदशाष्टमंगलपूजा प्रारंभः ॥

॥ अष्ट मंगलिक थालमें ले कर इस मुजब पढे.

॥ दोहा ॥ स्वस्तिक दर्पण कुंज है, जडासन वर्ध-  
मान ॥ श्रीवठ नंदावर्त हे, मीनयुगल सुविधान ॥१॥  
अतुल विमल खंभित नहीं, पंच वरणके साल ॥  
चंद्रकिरण सम उज्ज्वलें, युवती रचे विशाल ॥ २ ॥  
अति सलक्षण तंडुलें, लेखी मंगल आठ ॥ जिनवर  
अंगें पूजतां, आनंद मंगल ठाठ ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ श्रीराग ॥ जिन गुण गान श्रुति अमृतं ॥  
ए देशी ॥ मंगलपूजा सुरतरुकंद ॥ ए आंकणी ॥ सि-  
द्धि आठ आनंद प्रपंचे, आठ करमका काटे फंद ॥  
मं० ॥ १ ॥ आठों मद जये ठिनकमें दूरे, पूरे अडगु-  
ण गये सब धंद ॥ मं० ॥ २ ॥ जो जिन आठ मंग-  
लशुं पूजे, तस घर कमला केलि करंद ॥ मं० ॥ ३ ॥  
आठ प्रवचन सुधारस प्रगटे, सूरि संपदा अतिही उ-  
त्तंग ॥ मं० ॥ ४ ॥ आतम अडगुण चिदघन राशि,  
सहज विलासी आतम चंद ॥ मं० ॥५॥ यह पढकें  
प्रभु आगें अष्ट मंगल चढावे ॥ इति ॥ १३ ॥

( ५९ )

॥ अथ चतुर्दशधूपपूजा प्रारंभः ॥

धूप रकेबीमें ले के मुखसें इसमुजब पढे.

॥ दोहा ॥ मृगमद अंगर सेलारस, गंधवटी घन  
सार ॥ कृष्णागर शुद्ध कुंदरु, चंदन अंबर जार ॥१॥  
सुरजि ड्रव्य मिलायके, करे दशांगज धूप ॥ धूपधा-  
णमें ले करी, पूजे त्रिचुवनचूप ॥ ५ ॥

॥ढाल॥ राग पीढु ॥ मेरे जिनंदकी धूपसें पूजा, कु-  
मति कुगंधी दूर हरी रे ॥ मेरे० ॥ एआंकणी ॥ रोग हरे  
करे निजगुण गंधी, दहे जंजीर कुगुरुकी बंधी ॥ नि-  
र्मल जाव धरे जग धंदी, मुजे उतारो पार, मेरा कि-  
रतार, के अघ सब दूर करी ॥ मे० ॥ १ ॥ ऊर्ध्व ग-  
ति सूचक जवि केरी, परम ब्रह्म तुम नाम जपे री ॥  
मिथ्यावास डुखराशि जरे री, करो निरंजन नाथ,  
मुक्तिका साथ, के ममतामूल जरी ॥ मे० ॥ २ ॥ धू-  
पसें पूजा जिनवर केरी, मुक्तिवधू जइ ठिनकमें चे-  
री ॥ अब तो क्यों प्रचु कीनी देरी, तुमही निरंजन  
रूप, त्रिलोकी चूप, के विपदा दूर करी ॥ मे० ॥ ३ ॥  
आतम मंगल आनंदकारी, तुमरी चरण शरण अब  
धारी ॥ पूजे जेम हरी तेम आगारी, मंगल कमला  
कंद, शरदका चंद, के तामस दूर हरी ॥ मे० ॥ ४ ॥

( ६० )

यह पढकें प्रभुकूं ध्रुव उखेवे ॥ इति ध्रुप पूजा ॥१४॥

॥ अथ पंचदश गीतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ ग्राम जले आलापिने, गावे जिनगुण  
गीत ॥ जावे शुद्धज जावना, जाचे परम पुनीत ॥१॥  
फल अनंत पंचाशकें, जाखें श्रीजगदीश ॥ गीत नृ-  
त्य शुध नादसैं, जो पूजे जिन ईश ॥ २ ॥ तीन ग्रा-  
म स्वर सातसैं, मूरठना एकवीश ॥ जिन गुण गावे  
जक्तिशुं, तार तीस उगणीश ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ श्रीराग ॥ जिन गुण गावत सुरसुंदरी ॥ ए  
आंकणी ॥ चंपकवरणी सुर मनहरणी, चंद्रमुखी श्रुं-  
गार धरी ॥ जि० ॥ १ ॥ ताल मृदंग बंसरी मंरुल,  
वेराड उपांग दुनि मधुरी ॥ जि० ॥ २ ॥ देव कुमार  
कुमारी आलापे, जिनगुण गावे जक्ति जरी ॥ जि० ॥  
॥ ३ ॥ नकुल मुकुंद वीण अति चंगी, ताल ठंद अ-  
यति समरी ॥ जि० ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति  
प्रकाशी, चिदानंद सत् रूप धरी ॥ जि० ॥ ५ ॥ अ-  
जर अमर प्रभु ईश शिवंकर, सर्व जयंकर दूर हरी  
॥ जि० ॥ ६ ॥ आतम रूप आनंद घन संगी, रंगी  
निज गुन गीत करी ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥ १५ ॥



( ६१ )

॥ अथ षोडश नाटक पूजा ॥

॥ दोहा ॥ नाटक पूजा सोलमी, सजि सोढे श-  
णगार ॥ नाचे प्रचुनी आगळें, जव नाटक सब टार  
॥१॥ देव कुमर कुमरी मली, नाचे एक शत आठ ॥ रचे  
संगीत सुहावना, बत्तिस विधका नाट ॥ २ ॥ राव-  
ण ने मंदोदरी, प्रजावती सुरियाज ॥ द्रौपदी ज्ञाता  
श्रंगमें, लियो जन्मको लाज ॥ ३ ॥ टालो जव ना-  
टक सवी, हे जिन दीनदयाल ॥ मिल कर सुर नाटक  
करे, सुधर बजावे ताल ॥

॥ढाल॥राग कल्याण ॥ एक ताल ॥ नाचत सुर वृंद  
ठंद, मंगल गुन गारी ॥ ए आंकणी ॥ कुमर कुमरी कर  
संकेत, आठ शत मिल ज्रमरी देत ॥ मंद्र तार रण  
रणाट, घुघरु पग धारी ॥ ना० ॥ १ ॥ बाजत जि-  
हां मृदंग ताल, धप मप धुधु मकिट धमाल ॥ रंग  
चंग ड्रंग ड्रंग, त्रौं त्रौं त्रिक तारी ॥ ना० ॥ २ ॥ त  
ता थेश थेश तान लेत, मुरज राग रंग देत ॥ तान मा-  
न गान जान, किट नट धुनि धारी ॥ ना० ॥ ३ ॥  
तुं जिनंद शिशिर चंद, मुनिजन सब तार वृंद ॥ मंग-  
ल आनंद कंद, जय जय शिवचारी ॥ ना० ॥ ५ ॥  
रावण अष्टापद गिरिंद, नाच्ये सब साज संग ॥ बां-

( ६२ )

ध्यो जिनपद उत्तंग, आतम हितकारी ॥ ना० ॥ ५ ॥ १६ ॥

॥ अथ सप्तदश वाजिन्न पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ तत वीतत घन जूसरे, वाद्य जेद  
चार ॥ विविध ध्वनि कर शोचते, पूजा सतरमी सार  
॥ १ ॥ समवसरणमें वाजिया, नाद तणा जंकार ॥  
ढोल ददामा डुंडुजी, जेरी पणव उदार ॥ २ ॥ वेणू  
वीणा किंकिणी, षड् त्रामरी मरदंग ॥ ऊलरी चंजा  
नादशुं, शरणार्ई मुरजंग ॥ ३ ॥ पंच शब्द वाजे करी,  
पूजे श्री अरिहंत ॥ मनवांठित फल पामियें, लहि-  
यें लाज अनंत ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ मन मोह्या जंगलकी हरणीने ॥ ए दे-  
शी ॥ जवि नंदो जिनंद जस वरणीने ॥ ए आंकणी ॥  
वीण कहे जग तुं चिर नंदे, धन धन जग तुम करणी  
ने ॥ ज० ॥ १ ॥ तुं जगनंदी आनंदकंदी, तपढी  
कहे गुण वरणीने ॥ ज० ॥ २ ॥ निर्मल ज्ञान वचन  
मुख साचे, तूण कहे दुःख हरणीने ॥ ज० ॥ ३ ॥  
कुमति पंथ सव षिनमें नासे, जिन शासन उदेधरणी  
ने ॥ ज० ॥ ४ ॥ मंगल दीपक आरति करतां, आतम  
चित्त शुज जरणेने ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति सत्तरमी पूजा ॥

( ६३ )

॥ अथ कलश ॥

॥ रेखता ॥ जिनंद जस आज में गायो, गयो अघ  
दूर मो मनको ॥ शत अठ काव्य हू करकें, श्रुणे सब  
देव देवनको ॥ जि० ॥ १ ॥ तप गह्व गगन रवि रू-  
पा, हुआ विजयसिंह गुरु चूपा ॥ सत्य कर्पूर विज-  
यराजा, दामा जिन उत्तमा ताजा ॥ जि० ॥ २ ॥  
पद्म गुरु रूप गुण चाजा, कीर्ति कस्तूर जग बाजा ॥  
मणीबुध जगतमें गाजा, मुक्ति गणि संप्रति राजा ॥  
जि० ॥ ३ ॥ विजय आनंद लघु नंदा, निधि शशी  
अंक हे चंदा ॥ अंबाले नग्रमें गायो, निजातम रूप  
हुं पायो ॥ जि०॥४॥इति मुनि आत्मारामजी आनंद  
विजयजी कृत सत्तर जेदी पूजा संपूर्णा ॥

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

अथ न्यायांचोनिधि मुनि श्रीमद् आत्माराम  
आनंदविजयजी विरचित

॥ अष्टप्रकारी पूजा प्रारच्यते ॥

॥ दोहा ॥ जिनवर वाणी चारती, दारति तिमिर  
अज्ञान ॥ सारति कविजन कामना, वारति विघ्ननि-  
दान ॥ १ ॥ चिदानंद घन सुरतरु, श्रीशंखेश्वर पास॥

पदकज प्रणमी तेहनां, आणी जाव उलास ॥ २ ॥  
पूजा अष्टप्रकारनी, अंग तीन चित धार ॥ अग्र पंच  
मनमोदसें, करि तरियें संसार ॥ ३ ॥ न्हवण विलेप-  
न सुमनवर, धूप दीप अति चंग ॥ वर अद्दत नैवेद्य  
फल, जिन पूजन मन रंग ॥ ४ ॥ उज्ज्वल विमल  
वसन धरी, शुचि तनु मन जिन राग ॥ उत्तरासंग मु-  
खकोशको, बांधो सुजग सोजाग ॥ ५ ॥ अधिक सु-  
गंध जलें जरी, कंचन कलश अनूप ॥ नर नारी ज-  
कें करी, पूजे त्रिजुवन चूप ॥ ६ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा प्रारब्धते ॥

॥ राग मालकोश ॥ न्हवण करो जिनचंद, आनं-  
द जर ॥ न्हवण ० ॥ ए आंकणी ॥ कंचन रतन कलशज-  
ल जरकें, महके वास सुगंध ॥ आ ० ॥ १ ॥ सुरगिरि  
ऊपर सुरपति सघरे, पूजे त्रिजुवन इंद्र ॥ आ ० ॥ २ ॥  
श्रावक तिम जिन न्हवण करीने, काटे कलिमल फंद  
॥ आ ० ॥ ३ ॥ आत्म निर्मल सब अघ टारी,  
अरिहंत रूप अमंद ॥ आ ० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ जलपूजा विधिसें करे, टरे करममल  
वृंद ॥ हरे ताप सब जगतकी, करे महोदय चंद ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ राग जयजयवंती ॥ सुरगण इंद्र

( ६५ )

मधुर ध्वनि ठंड, पठन करी करे न्हवण जिनंदा ॥  
मागध वरदामने परजासा, अपर तरंगिणी उदक अ-  
मंदा ॥१॥ क्षीरोदधि अडजाति कलशजर, न्हवण क-  
रे जिम चोशठ इंदा ॥ तिम श्रावक जिन जक्तीरंगें, न्ह-  
वण करे जरे करमको कंदा ॥ सुर० ॥१॥ विप्रवधू सो-  
मेश्वरी नामें, जल पूजनसैं लहे महानंदा ॥ कारण का-  
रज समज जलीपरें, आतमअनुभव ज्ञान अमंदा ॥३॥

॥ अथ काव्यं ॥ मंत्रः ॥ ॐ ॐ श्री परमपुरुषा-  
य परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जि-  
नेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥१॥ इति प्रथम पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपनपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ कुमति कुवास निरासिनी, वासिनी चि-  
द्घन रूप ॥ ज्ञासिनी अमर अनघपद, नाशिनि जव  
जलकूप ॥१॥ सुरपति जिन अंगें करे, सरस विलेपन  
सार ॥ श्रावक तिम लेपन करे, चंदन घसि घनसार ॥१॥

॥ राग जिंद काफी ॥ कर रे कर रे कर रे कर रे,  
श्रीजिनचंद विलेपन कर रे ॥ श्रीजि० ॥ ए आंकणी ॥  
चेतन जान कल्याण करनकों, आन मित्यो अवसर  
रे ॥ शास्त्र प्रमान जिनंदही पूजी, मन चंचल स्थिर  
कर रे ॥ श्रीजि० ॥ १ ॥ सरस चंदन केशर हरिचंदन-

( ६६ )

घसी घनसार सुधर रे ॥ कनक रतन जरी जरी रे क-  
चोरी, मन वच तनु शुचि कर रे ॥ श्रीजि० ॥ १ ॥  
चरण जानु कर अंश शिरोपर, जालकंठ प्रचु उर रे ॥  
उदर तिलक नव कर जिनवरके, आतम आनंद  
जर रे ॥ श्रीजि० ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥ शीतल गुण जिनमें वसे, शीतल जि-  
नवर अंग ॥ आतम शीतल कारणें, पूजो अरिहंतरंग ॥

॥ अथ गीतं ॥ राग कसूरी जंगलो ॥ सिद्धि वधू  
लक्ष रे, जिनरंग राची ॥ जिन० ॥ ए आंकणी ॥ ह-  
रिचंदन घनसार सुमन हर रे, द्रव्य तिलक नव दक्ष ॥  
जि० ॥ १ ॥ अचल सुरंगी सुमन गुण जृंगी रे, ज्ञा-  
वतिलक शिर जक्ष ॥ जिन० ॥ २ ॥ पूजक चार तिल-  
क करि अंगें रे, पूजे अति हरखक्ष ॥ जि० ॥ ३ ॥ ज-  
यसुर शुजमति जिनवर पूजी रे, दंपती शिवपद लक्ष  
॥ जि० ॥ ४ ॥ आतमानंदी करम निकंदी रे, आ-  
नंदरस रंग ॥ जि० ॥ ५ ॥

॥ अथ काव्यं ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० जि-  
नेन्द्राय चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ इति पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ तृतीय कुसुमपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ त्रीजी पूजा सुमनकी, सुमन करे ज-

वि रंग ॥ पंचबाण पीडा हरे, जावसुगंधि अजंग ॥ १ ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ अब मावडी गिरि जान दे,  
मेरा नेमजीसैं काम है ॥ ए देशी ॥ अब ऋविक जन  
जिन पूज ले, जिन सुधरे सघरे काम ॥ अब० ॥ ए  
आंकणी ॥ अतिही सुगंधी कुसुम लीजें, खरचीने ब  
हु दाम रे ॥ मोघरा चंपक मालती, केतकी पारुल  
आम रे ॥ अब० ॥ १ ॥ जासुल प्रियंगु पुन्नाग ना-  
ग, दाउदी वरनाम रे ॥ मचकुंद कुंद चंबेलि ले, जे  
उगियां शुज थान रे ॥ अब० ॥ २ ॥ सदा सोहाग-  
न जाइ जुइ, बोलसिरी शुज ठाम रे ॥ लही कुसुम  
जिनवर देवने, पूजो जरे जिम काम रे ॥ अब० ॥ ३ ॥  
शुज सुमन केरी माल गुंथी, जिनगले धरी जाम रे ॥  
आतम आनंद सुहंकरं, जिम मिले शिववधूधाम रे ॥

॥ दोहा ॥ सुजग अखंरु कुसुम ग्रही, दूर करी स-  
ब पाप ॥ त्रिभुवन नायक पूजियें, हरे मदन संताप ॥

॥ अथ गीतं ॥ श्रीराग वा कालिंगडो ॥ मंगल  
पूजा सुरतरु कंद ॥ मं० ॥ ए देशी ॥ जिनवर पूजा  
शिवतरु कंद ॥ जिनवर० ॥ ए आंकणी ॥ दमनक  
मरुवो बकुल केवडो, सरस सुगंधित अति महकंद  
॥ जि० ॥ १ ॥ कुसुमार्चन ऋवि करो मन रंगें, ताप हरे

( ६७ )

प्रभु जिनवरचंद ॥जि०॥१॥विषयि देवकों आक धनु-  
रा, पूजे नरवायस मतिमंद ॥जि०॥३॥ वणिक धुआ  
लीलावती पूजी, फूलें जिनवर हरि जव फंद ॥जि०॥४॥  
आतम चिदूधन सहजविलासी, पामी सत्चित् पद  
महानंद ॥ जि० ॥ ५ ॥

॥ अथ काव्यं ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥  
जिनेंद्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ इति तृतीयपूजा ॥३॥

॥ अथ चतुर्थं धूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ कर्मधनके दहनकों, ध्यानानल करि  
चंरु ॥ द्रव्य धूप करि आतमा, सहज सुगंधित मंरु ॥

॥ राग पीलू ॥ अथवा बरवा ॥ धूप पूजा अघ चूरे  
रे जविका, धूप पूजा अघ चूरे ॥ एतो जव जयनास-  
त दूरें रे ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ कृष्णागर अंबर घ-  
नसारे, तगर कपूरसनूरे ॥ कुंदरु मृगमदतुरक सुगंधि,  
चंदन अगर सचूरे रे ॥ जविका० ॥ १ ॥ ए सब चूरण  
करी मनरंगें, जंगे करम अंकूरे ॥ नव नव रंगी शु-  
द्धशांगी, जिनवर आगें अदूरें रे ॥ जविका० ॥ २ ॥  
धूपदान कंचनमणि रत्नै, जडित घडित अति पूरे ॥  
निर्धूम पावक अति चमकंती, जिनपतिको कर तुं रे  
॥ जविका० ॥ ३ ॥ जिनवर मंदिरमें महमहती, द-



( ६९ )

शदिग सुगंध पूरे ॥ आतम धूप पूजन ऋविजनके,  
करम दुर्गंधने चूरे रे ॥ ऋवि० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ धूपदान निज घट करी, जिनऋक्तीवर  
धूप ॥ करम कुगंधी मिट गइ, पूजे आतमऋूप ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ राग खमाचका तिलाना ॥

॥ पूजित आनंद कंदरी हेरी माई ॥ पूजित० ॥

ए आंकणी ॥ जिनप जिनंद चंद, पूजे सुर नरवृंद ॥

सेवत अनूप धूप, मिटे दुर्गंध रूप ॥ जिनवर अंध

ऋम, तिमिरऋानु तुं ॥ मरन हरन तुम, चरनननन ॥

पूजित० ॥ १ ॥ दश अंग धूप खेवी, दशही निदान

सेवी ॥ सुऋग सुरंगी रंगी, मुगती वधूटी खेवी ॥ जिन

वर सेवी हम, ऊर्ध्व अऋंग गति ॥ तिम तुम गति जि

न, अरचनननन पूजित० ॥ २ ॥ सिऋ बुऋ अजर,

अमर अज निर्मल ॥ कालवेदी ऋव ठेदी, दूर करी क

लमल ॥ एसा महानंद पद, धूप पूजा फल करे ॥ अ-

खय ऋंकार ऋरे, कोन करे वरनननन ॥ पूजित० ॥

॥३॥ वाम अंगें धूप करी, पूजी मनऋुऋ करी ॥ चारगति

दुःख हरी, आत्म आनंद ऋरी ॥ विनयंधर नृपसात,

ऋव सिऋि वर ॥ नहिं कोइ तुम विन, सरनननन,

( ७० )

॥ काव्यम् ॥ मंत्रः ॥ ॐ ॐ श्री परम० जिनेंद्रा  
य धूपं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम दीपक पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ पंचमि पूजा जिन तणी, पंचमि गति  
दातार ॥ दीपकसें प्रभु पूजियें, पामियें केवल सार ॥

॥ राग सिंध काफी ॥ पूजो अरिहंत रंगें रे, जवि  
जाव सुरंगें ॥ पूजो ॥ ए आंकणी ॥ दीपक ज्योति  
बनी नवरंगी, जिनजीके दाहीण अंग ॥ रयण ज-  
डित चमकत शुभ्र रंगें, गोघृत जरी अति चंगरे ॥ ज-  
वि ॥ १ ॥ करुणा रससें धरी शुभ्र फानस, मरत  
न जेम पतंग ॥ जगमग ज्योती सुंदर दीपे, अनुभव  
दीप अजंग रे ॥ जवि ॥ २ ॥ जिन मंदिरमें दीप प्र-  
गट करी, जावना शुद्ध मन रंग ॥ ध्यान विमल क-  
रतां अघ नासे, मिथ्या मोह जुजंग रे ॥ जवि ॥ ३ ॥ दीप  
दरससें तस्कर नासे, आतम तिमिर उतंग ॥ तिम जिन  
पूजित मिले चित्त दीपक, जरत हे समरपतंग रे ॥ जवि ॥

॥ दोहा ॥ अव्य दीपक विजावरी, तिमिर करे सब  
दूर ॥ जाव दीपक जिन जक्तिसें, प्रगटे केवल सूर ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ राग नैरवी ॥ दीप जयंकर चिद्घ  
न संगी, केवल जगत प्रकाशे रे ॥ ए आंकणी ॥ अ-

व्य दीपक अर्चन करि रंगें, मिथ्या तिमिर निरासे रे ॥  
तस फल केवल दीप सुहंकर, लोकालोक विकासे रे ॥ १ ॥  
पडत पतंग न धूपकी रेखा, केवल दीप उजासे रे ॥  
जनम मरण गति चार जयंकर, दुर्मति दुःख सब  
नासे रे ॥ दी० ॥ २ ॥ घृत विन पूरे ज्योति अखं-  
कित, वर्त्तिक मन्न न चिकासे रे ॥ पाप पतंग जरत  
सब ढिनमें, ज्योतिमें ज्योति मिलासे रे ॥ दी० ॥ ३ ॥  
जिनमति धनसिरि दीप पूजनसें, सिद्धगती सुखरा-  
सें रे ॥ आतम आनंद घन प्रभु मिलशे, पूजत जवि  
जो उह्लासें रे ॥ दीप० ॥ ४ ॥

॥ काव्यम् ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्री परम० जिनेंद्रा-  
य दीपं यजा० ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

॥ अक्षय शिव सुख कारणें, अक्षत पूजा सार ॥  
चौगति चूरण साथियो, करे कुमति मत ढार ॥ १ ॥

॥ राग बढंस ॥ तुम तो सुधर जये शिव साधो,  
अक्षत पूजा करो मनमें रे ॥ तुम तो० ॥ ए आंकणी ॥  
अक्षत तंडुल मणि मुक्ताफल, साथियो कर जिन बिं-  
ब पुरो रे ॥ माणक मरकत अंक आदिसें, जिन पू-  
जी मन आनंद लो रे ॥ तुम० ॥ १ ॥ तंडुल गोधू-

म अन्न अखंभित, आदि द्वेद् द्विग पूज करो रे ॥ अ-  
द्वत पूजा करी मन रंगें, अद्वत सुख जंकार जरो रे  
॥ तुम० ॥ २ ॥ आतम अनुभव रत्न सुरंगो, चिंताम-  
णि सुरद्रुम खरो रे ॥ अद्वत पूजासैं जवि प्रगटे, जि-  
नवर जक्ति हृदयमें धरो रे ॥ तुम० ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥ शुद्धाद्वत तंडुल ग्रही, नंदावर्त्त विधा-  
न ॥ जिन सन्मुख होय पूजियें, जरे करमसंतान ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ राग मराठीमें ॥ अरिहंत पद अ-  
र्चन करी चेतन, जिन सरूपमें रम रहीयें ॥ निज  
सत्ता प्रगटे जारकें, करम जरम निज सुख लहियें ॥  
अरिहंत० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ तुं निज अचल ईश  
विभ्रुचिद्वधन, रंग रूप विण तुं कहीयें ॥ अज अच-  
ल निराशी, शिवशंकर अघहर जग महीयें ॥ अरिहं०  
॥ २ ॥ अव्यय विभ्रु निरंजन स्वामी, त्रिभुवन रामी  
तुं कहीयें ॥ सब तेरी विभ्रुति, अद्वत अर्चनसे ऊट  
लहियें ॥ अरिहं० ॥ ३ ॥ मरुदेवी नंदन चरणसुहंकर,  
कीर जुगल अद्वत गहीयें ॥ करि अर्चन सुरनर, अं  
तमें परमात्मपद रस वहीयें ॥ अरि० ॥ ४ ॥

॥ काव्यम् ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्री परम० ॥ जिनै-  
द्राय अद्वतान् यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम नैवेद्य पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ शुचि निवेद्यरस सरसशुं, जरि अष्टापद थाल  
ल ॥ विविध जाति पकवानसैं, पूजियें त्रिचुवन पाल ॥ १ ॥

॥ राग तुमरी ॥ जिन अर्चन सुखदाना रे ॥ ज-  
विका ॥ जिन० ॥ ए आंकणी ॥ अमृति अमृत पा-  
क पतासां, बरफी कंद विदाना रे ॥ फेणी घेवर मो-  
दक पेठा, मगदल पेंका सोहाना रे ॥ जि० ॥ १ ॥ ला-  
खणसाइ सकरपारा, मोतीचूर मनमाना रे ॥ खाजा  
खुरमां खीर खांरु घृत, सेव कंसार विधाना रे ॥ जि०  
॥ २ ॥ साटा दोठां मठडी सबुनी, कलाकंद कलि  
दाना रे ॥ सीरा लापसी पूरी कचोरी, शाल दाल घृ-  
त आनां रे ॥ जिन० ॥ ३ ॥ इत्यादि नैवेद्य सुरंगा,  
पूजियें त्रिचुवन राना रे ॥ आतमआनंद शिव पदरंगी,  
संगी सदा आधाना रे ॥ जि० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ अनाहार पद दीजियें, हे जिन दीनद-  
याल ॥ करुं अर्चन नैवेद्यशुं, जर जर सुंदर थाल ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ राग जंगलो ॥ महावीर तोरे सम-  
वसरणकी रे ॥ महा० ॥ ए देशी ॥ जिनंदा तोरे च-  
रणकमलकी रे, जो करे अर्चन नर नारी ॥ नैवेद्य ज-  
री शुभ थारी, तनमन कर शुद्ध आगारी ॥ जिनंदा

तोरे चरण सरणकी रे ॥ जिनंदा० ॥ ए आंकणी ॥  
॥ १ ॥ वीणा रंग राजे रे, मृदंग ध्वनि गाजे रे, वा-  
जे वाजितर चारी ॥ मिल अर्चन जन शृंगारी, आ-  
ये जिनमंदिर शुचकारी ॥ जिनंदा० ॥२॥ ऋविजन  
पूजो रे, जगमें देव न दूजो रे, धूजे जिम करम क-  
ठारी ॥ मागुं पद आणाहारी, ज्युं वेगें वरुं शिवना-  
री ॥ जिनं० ॥ ३ ॥ पूजा फल ताजा रे, हाक्षीजन  
राजा रे, आतमकों आनंदकारी ॥ ऋव चांति मिट  
गइ सारी, जिन अर्चनकी बलिहारी ॥ जि० ॥ ४ ॥

॥ काव्यम् ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ जिनै-  
द्राय नैवेद्यं यजा० ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ अष्ट करमके हरनको, आठमि पूजा  
सार ॥ अडगुण आतम परगटे, फल पूजन फलकार ॥

॥ राग तुमरी ॥ महावीर चरणमें जाय, मेरो  
मन लाग रह्यो ॥ महा० ॥ ए देशी ॥ मेरो मनरंग रे-  
ह्यो, फल अर्चनमें सुखदाय ॥ मेरो० ॥ ए आंकणी ॥  
श्रीफल पूगी पिस्ता बदामा, द्राख अखोड मिलाय ॥  
मेरो० ॥ १ ॥ खारक मीठे अंब नारंगी, कदली सी-  
ताफल लाय ॥ मेरो० ॥ २ ॥ द्राख आलूचां फनस

( ७५ )

संतरां, अंगुर जंबीर सुदाय ॥ मेरो० ॥ ३ ॥ तरबूजां  
खरबूज सिंगोडां, सेव अनार गिनाय ॥ मेरो० ॥४॥  
इत्यादि शुभ फल रस चंगें, कंचन थाल जराय ॥ मे-  
रो० ॥ ५ ॥ फलसैं पूजा अर्हन् केरी, आतम शिव  
फल थाय ॥ मेरो० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥ इंद्रादिक जिम फल करी, पूजे श्री  
अरिहंत ॥ तिम श्रावक पूजन करे, फल वरे सादि  
अनंत ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥ रेखता ॥ जिनवर पूज सुखकंदा,  
नसे अड कर्मका धंदा ॥ सुंदर जरि थाल रतनंदा,  
जिनालये पूज जिनचंदा ॥ जिन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥  
विविध फल साररस चंगा, अपुनरावृत्ति फल मंगा ॥  
अड दिठि संपदा रंगा, बुद्धि सिद्धी शिव वधू संग  
॥ जि० ॥ २ ॥ पूजे जवि जावशुं रंगा, करी अडक-  
र्मशुं जंगा ॥ करी शुध रूप अनंगा, उतरी अनादिकी  
जंगा ॥ जि० ॥ ३ ॥ कीरयुग दुर्गता तंगा, करी  
फल पूजना मंगा ॥ आतम शिवराज अजंगा, विम-  
ल अति नीर जिम गंगा ॥ जिन० ॥ ४ ॥

॥ काव्यम् ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्री परम० जिनेंद्रा-  
य फलं यजा० ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ पूजन करो रे आनंदी, जिनंद  
पद पूजन करो रे ॥ आ० ॥ ए आंकणी ॥ अष्टप्रकारी  
जनहित कारी, पूजन सुरतरु कंदी ॥ जि० ॥ १ ॥ श्राव-  
क द्रव्यज्ञाव करे अर्चन, मुनिजन ज्ञाव सुरंगी ॥ जि०  
॥ २ ॥ गणधर सुरगुरु सुरपति सगरे, जिनगुण  
कोन कहंदी ॥ जि० ॥ ३ ॥ में मतिमंदही बाल  
रमण ज्युं, जिनगुण कथन करंदी ॥ जि० ॥ ४ ॥ तप  
गह्व मुनिपति विजय सिंहवर, सत्य विजय गणि  
नंदी ॥ जि० ॥ ५ ॥ कपूर क्षमा जिनोत्तम सद्गुरु  
पद्मरूप सुखकंदी ॥ जि० ॥ ६ ॥ कीर्त्तिविजय कस्तूर  
सुहंकर, मणीविजय पद वंदी ॥ जि० ॥ ७ ॥ श्री  
गुरु बुद्धिविजय महाराजा, कुमति कुपंथ निकंदी ॥  
जि० ॥ ८ ॥ शिखि जुग अंक इंद्रु (१ए४३) शुजवर्षे,  
पाळिताणा सुरंगी ॥ जि० ॥ ९ ॥ विमलाचल मंरुन  
पद जेटी, तन मन अधिक उमंगी ॥ जि० ॥ १० ॥  
आतमराम आनंद रस पीनो, जिन पूजत शिवसंगी  
॥ जि० ॥ ११ ॥ इति

॥ इति श्रीमदात्माराम (आनंदविजयजी) महा-  
राज विरचित अष्टप्रकारी पूजा समाप्ता ॥



॥ अथ सिद्धाचलमंरुनरुषन्नजिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग माढ ॥ मनरी बातां दाखां जी ह्वारा राज हो रुषन्नजी थाने ॥ मनरी० ॥ ए आंकणी ॥ कुमतिना नरमाया जी म्हारा राज रे कांइ ॥ व्यवहारि कुलमें काल अनंत गमाया जी म्हारा राज हो ॥ रुषन्नजी० ॥ १ ॥ कर्म विवर कुठ पाया जी म्हारा० ॥ मनुष्य जनमें आरज देशें आया जी ॥ म्हारा० ॥ ॥ रुषन्न० ॥ २ ॥ मिथ्या जन नरमाया जी ॥ म्हारा० ॥ कुगुरु वेषें अधिको नाच नचाया जी ॥ म्हारा० ॥ रुषन्न० ॥ ३ ॥ पुण्यउदय फिर आया जी ॥ म्हारा० ॥ जिनवर चाषित तत्त्व पदारथ पाया जी ॥ म्हारा० ॥ रुषन्न० ॥ ४ ॥ कुगुरु संग ठटकायाजी ॥ म्हारा० ॥ राजनगरमें सुगुरु वेष धराया जी ॥ म्हारा० ॥ रुषन्न० ॥ ५ ॥ सघलां काज सरायां जी ॥ म्हारा० ॥ मनडो मर्कट माने नहीं समजाया जी ॥ म्हारा० ॥ रुषन्न० ॥ ६ ॥ कुविषयासंग ध्यावे जी ॥ म्हारा० ॥ ममता मायासाथें नाच नचावे जी ॥ म्हारा० ॥ रुषन्न० ॥ ७ ॥ महिमा पूजा देखी मान नरावे जी ॥ म्हारा० ॥ निरगुणीयाने गुणीजन जगमें कहावे जी ॥ म्हारा० ॥ रुषन्न०

॥ ७ ॥ ठठीवारे तुमरे द्वारें आया जी ॥ म्हारा० ॥  
करुणासिंधु जगमें नाम धराया जी ॥ म्हारा० ॥ ऋष-  
ज्ञ० ॥ ए ॥ मन मर्कटकुं शिखो निजघर आवे जी  
॥ म्हारा० ॥ सघली वातें सुमता रंग रंगावे जी ॥  
म्हारा० ॥ ऋषज्ञ० ॥ १० ॥ अनुज्ञव रंग रंगीला ॥  
समता संगें जी ॥ म्हारा० ॥ आतमताजा अनुज्ञव  
राजा रंगें जी ॥ म्हारा० ॥ ऋषज्ञ० ॥ ११ ॥  
॥ अथ श्रीसिद्धाचलमंरुन ऋषज्ञदेवनुं स्तवन ॥

॥ राग मराठीमें ॥ ऋषज्ञ जिनंद विमलगिरि मं-  
रुन, मंरुन धर्मधुरा कहीयें ॥ तुं अकल सरूपी जा-  
रकें करम, नरम निजगुण लहीयें ॥ ऋषज्ञ ॥ १ ॥  
अजर अमर प्रभु अलख निरंजन, जंजन समर स-  
मर कहीयें ॥ तुं अद्भुत योद्धा मार कें, करम धार  
जग जश लहीयें ॥ ऋषज्ञ० ॥ २ ॥ अव्यय विभु ई-  
श जगरंजन, रूप रेखा बिन तुं कहीयें ॥ शिव अचर  
अनंगी तारकें, जगजन निज सत्ता लहीयें ॥ ऋष-  
ज्ञ० ॥ ३ ॥ शतसुत माता सुता सुहंकर, जगत ज-  
यंकर तुं कहीयें ॥ निजजन सब ताख्यो हमोसैं, अंतर  
रखनां ना चहियें ॥ ऋषज्ञ० ॥ ३ ॥ मुखडा जींचके  
बेसी रहेनां, दीन दयालको ना चहियें ॥ हम तन

मन ठारो वचनसें, सेवक अपनां कह दश्यें ॥ ऋष-  
ज०॥५॥ त्रिभुवन ईश सुहंकर स्वामी, अंतरजामी तुं  
कहीयें ॥ जब हमकुं तारो प्रभुसें, मनकी वात सक-  
ल कहीयें ॥ ऋषज० ॥ ६ ॥ कल्पतरु चिंतामणि जा-  
शो, आज निरासें ना रहीयें ॥ तुं चिंतित दायक  
दासकी, अरजी चित्तमें दृढ गहीयें ॥ ऋषज०॥७॥ दी-  
नहीन परगुण रस राची, शरण रहित जगमें रहीयें  
॥ तुं करुणा सिंधु दासकी, करुणा क्युं नहि चित  
ग्रहीयें ॥ ऋषज० ॥ ८ ॥ तुमविन तारक कोइ न  
दीसे, होवे तुमकुं क्युं कहीयें ॥ इह दिलमें ठानी  
तार के, सेवक जगमें जश लहीयें ॥ ऋषज० ॥ ९ ॥  
सात वार तुम चरणें आयो, दायक शरण जगत क-  
हियें ॥ अब धरणें बेशी नाथसें, मनवंडित सब कुठ  
लहियें ॥ ऋषज ॥ १० ॥ अवगुण मानी परिहर-  
शो तो, आदिगुणी जग को करीयें ॥ जो गुणीजन  
तारियें तो, तेरी अधिकता क्या कहीयें ॥ ऋषज०॥  
॥ ११ ॥ आतम घटमें खोज प्यारे, बाह्यजटकते ना  
रहीयें ॥ तुम अज अविनाशी धार निज, रूप आनं-  
द घनरस लहीयें ॥ ऋषज० ॥ १२ ॥ आतमानंदी  
प्रथम जिनेश्वर, तेरे चरण शरण रहीयें ॥ सिद्धाचल

( ७० )

राजा सब काजा, आनंद रसकों पी रहियें ॥ १३ ॥

॥ अथधर्मजिनस्तवनं ॥

॥ राग ज़ेरवी ॥ क्युं विसरो रे सुझानी जिनंदपद  
॥ क्युं विसरो रे ॥ ए आंकणी ॥ मनवच तनकर प-  
दकज सेवो, जृंगपरें लपटानी ॥ जि० ॥ १ ॥ मूग-  
ति सुरति त्रिचुवन मोहे, शांत सुधारस दानी ॥  
जि० ॥ २ ॥ धर्मनाथजिन धर्मके धोरी, कर्मकलंक  
मिटानी ॥ जि० ॥ ३ ॥ नगर नकोदर बिंब बिराजे,  
कर दर्शन सुख मानी ॥ जि० ॥ ४ ॥ आतम अनु-  
जव रस दे त्राता, वेगां वरुं शिव राणी ॥ जि० ॥ ५ ॥  
॥ अथ ऋषजिनस्तवनं ॥

॥ राग ज़ेरवी ॥ लागी लगन कहो केसें बूटे, प्रा-  
णजीवन प्रचु प्यारेसें ॥ लागी० ॥ ए आंकणी ॥  
निर्मल नीरकमल सरोवरमें, त्रमर रहत नहिं वारे  
सें ॥ लागी० ॥ १ ॥ चंद चकोर जये मगनमें, चक-  
वी जग चक तारेसें ॥ लागी० ॥ २ ॥ राजसिंह नव-  
लो नेह लाग्यो, नायक नाजि डुलारेसें ॥ लागी० ॥

॥ राग ज़ेरवी ॥ आज प्रचु तेरे चरणें लाग्यो,  
मिथ्या निंद सब खोइ रे ॥ आज० ॥ ए आंकणी ॥  
दर्शन कर परसन मन मेरो, आनंद चित्त अब

( ७१ )

होइ रे ॥ आज० ॥ १ ॥ तुम विन देव अवर नहि  
दूजो, देख्या त्रिजुवन जोइ रे ॥ आ० ॥ २ ॥ दास  
तुमारो करत विनति, तुम विन अवर न कोइ रे ॥

॥ राग खमाच ॥ श्रीवीतरागको दरस देख, दु-  
विधा मेरी मिट गइ रे ॥ श्रीवीतराग० ॥ ए आंक-  
णी ॥ अष्टद्रव्य लइ पूजन आयो, मनमें आनंद ह-  
र्ष वधायो ॥ में जिन वाणी कान सुणी, दुर्गत मेरी  
मीट गइ रे ॥ श्रीवी० ॥ १ ॥ रसना सफल जइ अ-  
ब मेरी, जक्ति उच्चार करी प्रजु तेरी ॥ अब पाइ आ-  
नंदकी घटा, तृष्णा नेरी मीट गइ रे ॥ श्रीवी०॥३॥  
अब में जन्म कृतार्थ मान्यो, गोपद तुल्य जवोदधि  
जान्यो ॥ अब पाइ मुक्तितणी रुगर, कक्षिमल मेरी  
मीट गइ रे श्रीवी० ॥ ३ ॥ जब लग मुक्ति न आवे  
नेरे, तब लग जक्ति वसो उर मेरे ॥ तेरी ठबी चंद-  
नके हृदे, तन मनसें लिपट रही रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥

॥ अथ शांतिजिनस्तवनं ॥

॥ राग खमाच ॥ शांति वदन कज, देख नेन म-  
धुकर मन लीनो रे ॥ शांति० ॥ ए आंकणी ॥ श्री  
जिनके मकरंद वेन, विरमी जव दुर्गंध घन ॥ शिव  
पुरके सदा सुख कंददेन, समकित रस जीनो रे ॥

( ७३ )

शांति० ॥ १ ॥ कामित पूरण कामधेन, मद मोह के  
चूरण ठाम फेन ॥ लीये मनको अलि आराम चैन,  
गुंजे अति जिनो रे ॥ शांति० ॥ २ ॥ कपूर कहे जि-  
न पदकुं एन, उर धारो नवि तार खेन ॥ होय मुक्ति  
सेज परसार सेन, आगम कहि दीनो रे ॥शां०॥३॥

॥ अथ जिनस्तवनं ॥

॥ राग जेरवी ॥ पांच वरणनी आंगी राची, कु-  
सुमनी जाती ॥ पांच० ॥ ए आंकणी ॥ कुंद मचकुं-  
द गुलाल शिरोवर, कर करणी सोवन जाती ॥  
पांच० ॥ १ ॥ दमनक मरुव पारुल अरविंदो, अंश  
जुइ बेजल बाती ॥ पांच० ॥ २ ॥ पारधी चरण क-  
द्वहार मंदारो, वर्ण पटकुल बनी जाती ॥ पांच०  
॥ ३ ॥ सुर नर किन्नर रमणी गाती, जेरेव कुगति  
डुत जाती ॥ पांच० ॥ ४ ॥

॥ अथ महावीरजिनस्तवनं ॥

॥ राग तुमरी ॥ महावीर तोरे समवसरणकी रे  
॥ महा० ॥ हुं जाउं बलिहारी वारी रे ॥ ए आंक-  
णी ॥ त्रण गढ उपर रे, तखत बीराजे रे, वाणी ज-  
न जोजन सारी ॥ हुं जाउं बलिहारी वारी रे ॥हुं०॥  
महावीर तोरे ॥ सम० ॥ १ ॥ देशना अमृत रे, धा-

( ७३ )

रा वरसे रे,जिन शासन हे जयकारी ॥ हुं जाउं ब-  
खिहारी वारी रे ॥ हुं० ॥ महावीर तोरे ॥सम०॥१॥  
ज्ञान विमल सूरि रे,जिन गुण गावे रे,तास्यां ठे नर  
ने नारी ॥ हुं जाउं बखिहारी वारी रे ॥ म० ॥ ३॥

॥ अथ अध्यात्म सधाय ॥

॥ राग माढ ॥ अध्यात्म प्रीत लागी रे,प्रीतलागी  
रे अध्यात्म ॥ ए आंकणी ॥ जेसें पंखी पींजरे रे,सोच  
करे मन मांह ॥ पर गुण अवगुणना लहे री, रहत  
जगतसें उदास ॥ अध्या० ॥ १ ॥ रत्न जडितको  
पिंजरो रे, शुका जानत फंद ॥ तीनलोककी संपदा  
रे, मुनि जन मानत फंद ॥ अध्या० ॥ २ ॥ कदली  
वन रेवा नदी रे, गज चाहे मनमांहि ॥ दर्शन  
ज्ञान चारित्रकुं रे, मुनि जन विसरत नांहि ॥ अ-  
ध्या० ॥ ३ ॥ सोहं सोहं सोहं सोहं, अजपा जपे  
रे जाप ॥ तिन लोककुं सुख करे रे,केवल रूपी आप  
॥ अध्या० ॥ ४ ॥ एसे गुरुकुं सेवीयेंजी, रहत जग-  
तसे उदास ॥ राग छेष दोय परिहरे ताकुं, रहत  
आनंदघन पास ॥ अध्या० ॥ ५ ॥

॥ अथ वैराग्यपदम् ॥

॥ राग सोरठी ॥ दुनीयां मतलबकी गरजी के,अ

ब मोहे नीके जान पडी ॥ दुनीया० ॥ ए आंकणी ॥  
 जोवनवंती नार हुवे जब, पीयाकों रंगरली ॥ जोव-  
 न गयां कोइ वात न पूठे, फीरेती गलीय गली के ॥  
 अब० ॥ १ ॥ जब लगे बेल वहे धनीयका, तबलग  
 चाह धणी ॥ बूढे बेलकी सार न जाणे, रुखता ग-  
 लीय गली के ॥ अब० ॥ २ ॥ हरे पेड पर पंखी बेठा,  
 जपता नाम हरि ॥ पान ऊडे पंखी उठ चाब्या, एही  
 रीत खरी के ॥ अब० ॥ ३ ॥ सतवंती सतसें उठ चाब्या,  
 मोहके जाळ फसी ॥ चूधर कहे जिने मर्म न जान्या,  
 मुरदे संग जली के ॥ अब० ॥ ४ ॥

॥ अथ नेमजिनस्तवनम् ॥

॥ राग तुमरी ॥ मोरवा बपैया बोले, पियु पियु  
 वनमें ॥ नेम श्याम गये सहसा वनमें ॥ मोरवा० ॥  
 ए आंकणी ॥ निशि अंधियारी कारी विजरी रुरावे,  
 दुजी विरह व्याकुल जइ तनमें ॥ मोरवा० ॥ १ ॥ रीम-  
 जीम रीमजीम वादल वरसे, नदीयां शोर करत हे  
 रनमें ॥ मोरवा० ॥ २ ॥ आनंद इसमे देखन चाहत,  
 राजुल जइ हे विरागण ठिनमें ॥ मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ समेतशिखरजीनी लावणी ॥

॥ बारा कोश विस्तार चक्रधारी, बन रहे मनोहर



( ७५ )

पर्वत सुखदाइ ॥ एकइंद्रिपंच इंद्रि तलक तांइ, धर  
गुणचास वर शिवरमणी पाइ ॥ मेरी लागी लगन  
समेतशिखरजीसें, धन घडी दिवस जब देखु नेनों  
सें ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥ शिखर चूमि खारथ सती, द्विखी ग्रं-  
थमें सोय ॥ जहां असंख्यात शिवपद लीया, कोनुं  
वरनन होय ॥१॥ ए विश टुक पर्वत पर सुखदाइ, ध-  
र ध्यान धरे जिहां वरे मोक्षनारी ॥ धन जोम शुद्ध  
आरजकी बलिहारी, शुच कर्म उदयसें पावत नर  
नारी ॥ तिर्यच नरकगति बूटे दरशनसें, धन घडी  
दिवस जब देखुं नेनोंसें ॥ मेरी० ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥ मन वच तन कर जावसें, करुं वंदना  
तोय ॥ सुरपत नरपत नागपत, शिव रमणीवर होय  
॥२॥ ए हुंमा सर्पिणी काल दोष जानो, चउ तीर-  
थ है चोघडी लीये आनो ॥ कैलास आदि गिरनार  
नेम जानो, श्रीवासुपूज्य चंपापुर हिये आनो ॥ श्री  
वीरधीर गये पावा पुरी स्थलसें, धन घडी दिवस  
सब देखुं नेनोंसें ॥ मेरी० ॥ ३ ॥

॥दोहा॥ पंच सेहेर पुरके निकट, गर्वनवादा गा-  
म ॥ तामध्ये शिव पद द्विया, श्रीगौतम जगवान

॥ ३ ॥ ज्ञाद्रोपद पडवा संवत अठारासैं, धर नवके ऊपर, पांच चले घरसैं ॥ काशी पटणा ममदर्श विविध दिलसैं, हम दरस कीये आनंदघन वरसैं ॥ धनलाल वंदना करुं शुद्ध मनसैं, धन घडी जब देखुं नेनोंसैं ॥ मेरी लागी लगन समेत शिखरजीसैं, धन घडी दिवस जब देखुं नेनोंसैं ॥ मेरी ० ॥ ४ ॥

॥ अथ गुरुगुण गहूंली ॥

॥ जगत गुरु जिनवर जयकारी ॥ ए देशी ॥ श्रोता रे सुणो गुरु गुणना रागी, जाणो रे थारी ज्ञाग्य दशा जागी ॥ श्रोता रे सुणो गुरु गुणना रागी ॥ ए आंकणी ॥ जंबूमां रे जरत जलो सुणीयें, देश गुर्जर राजनगर गणीयें ॥ शोजा रे तेह शहेर तणी सुणीयें ॥ श्रोता रे ० ॥ १ ॥ शोजे रे जिनमंदिर जयकारी, के शत उपर अठ निरधारी ॥ नमे रे जिहां नित नित नर नारी ॥ श्रोता रे ० ॥ २ ॥ करमदल कापवा बलवंता, साधु रे जिनशासनमां रमता ॥ एतो रे पांचे इंद्रियने दमता ॥ श्रोता रे ० ॥ ३ ॥ आव्या रे गुरु देश विदेश फरी, जूमि राजनगरनी पवित्र करी ॥ श्रोता रे मन संशय दूर हरी ॥ श्रोता रे ० ॥ ४ ॥ संवत उगणीश चाहीश विषे, गुरु गिरुवा उगणीश शि-

व्यें, रहि रे राजनगरमां कर्म पीसे ॥ श्रोता रे०॥५॥  
 तृष्णा तरुणीथी मन ताणी, विरति रमणी करी प-  
 टराणी ॥ जेह उजय लोकमां सुख खाणी ॥ श्रोता  
 रे० ॥६॥ विवेक ने मंत्री पदताजा, संवेग कुंवर की-  
 या युवराजा ॥ संवर रहे हाजरदरवाजा ॥ श्रोता  
 रे० ॥ ७ ॥ आर्जव पटहस्ति महाजारी, विनयरूप  
 घोडा शणगारी ॥ मुनि आतमराज करे जारी ॥ श्रो-  
 ता रे० ॥ ८ ॥ रथ संजम शियल तणा जरीया, सु-  
 जट शमदमथी अलंकारीया मुनि ॥ रेसमता रसना द-  
 रिया ॥ श्रोता रे० ॥ ९ ॥ के समकित महेल मनो  
 हारी, संतोष सिंहासन गुणकारी ॥ बेठा रे जहा मु-  
 नि मुद्राधारी श्रोता रे० ॥ १० ॥ चामर जिहां ध-  
 र्म शुकल करता, कीरति जश ठत्र जीहां फरतां ॥  
 कस्या रे जेणें मोह रिपु मरता ॥ श्रोता रे० ॥ ११ ॥  
 अलिक ड्रव्य राज कखुं अलगुं, जलुं रे जाव राजमां  
 मन वलगुं ॥ डुरित वन शीघ्र जेथी सलगुं ॥ श्रोता  
 रे० ॥ १२ ॥ आतमरूप लक्ष्मी रूडी लेवा, सदा करे  
 शांतिविजय सेवा ॥ मले रे जेथी मुक्ति तणा मेवा ॥

॥ अथ गुरुगुण गहूंली ॥

॥ जवि तुमें सुणजो रे, जगवती सूत्रनी वाणी

॥ एदेशी ॥ ऋवि तुमें सुणजो रे, गुरु मुख मधुरी  
वाणी ॥ दिलमां धरजो रे, समता रसगुणखाणी ॥ ए  
आंकणी ॥ पंजाब देशमां जन्म लियो गुरु, बालपणे  
व्रत धीधां ॥ व्याकरणाळंकार ऋणीने, दुर्मत दूरें की  
धा ॥ ऋवि० ॥ १ ॥ नाम समान गुणें शोचंता, सु-  
मति गुप्तिना धारी ॥ आतम निजपद ध्यानमां धी-  
ना, जीना जिन गुणक्यारी ॥ ऋवि० ॥ २ ॥ आगम  
अनुसारी किरियामां, अप्रमत्त गुरुराया ॥ तृष्णा त-  
रुणीथी मन ताणी, संयम तान लगाया ॥ ऋवि०  
॥ ३ ॥ गाम नगर पुर देशविदेशें, विचरंता व्रतधारी  
॥ बहु जनने प्रतिबोध दशने, दुर्मति दूर निवारी ॥ ऋ-  
वि० ॥ ४ ॥ संशय शत्रु ऋयंकर वारी, ऋयथी निर्ऋय की-  
धा ॥ स्यादमत तत्वस्वरूप बतावी, लोचन अमने दी-  
धां ॥ ऋवि० ॥ ५ ॥ कुमत वादलां दूर निवारी, कीधो हम  
सुपसाय ॥ ऊलहल दीवडा जिनवाणीना, प्रगटाया  
गुरुराय ॥ ऋवि० ॥ ६ ॥ एह उपगार तुमारो कहो  
गुरु, विसास्यो किम जाय ॥ स्मरण करी उपकारी  
तणा सहु, गुण गातां दुख जाय ॥ ऋ० ॥ ७ ॥ ज्ञान  
वधे ज्ञानी गुण गातां, ज्ञानी गुणथी ऋरीया ॥ शांतिवि-  
जय कहे गुरु गुण दरीया, केम तराये तरीया ॥ ऋ० ॥ ८ ॥

( ७९ )

॥ अथ गहूंली जाग पहेलो ॥

॥ आ गहूंलीमां मुनि श्रीआत्मारामजी (आनंद विजयजी) महाराजनुं जन्म चरित्र पण किंचित्मात्र बताववामां आव्युं ठे ॥

॥ सांजलजो रे मुनि संजमरागी, उपशम श्रेणें चडीया रे ॥ ए देशी ॥ जलुं थयुं रे मारे सुगुरु प-  
धार्या, जिन आगमना दरीया रे ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञान तरंगें लेहेरो लेता, ध्यान पवनथी जरीया रे ॥ जलुं थयुं रे ॥ १ ॥ आज कालमां जे जिन आगम, दृष्टि पंथमां आवे रे ॥ गहन गहन तेहना जे अर्थों, प्रगट करीने बतावे रे ॥ ज० ॥ २ ॥ शक्ति नहि पण ज-  
क्ति तणे वश, गुण गावा उलसावुं रे ॥ कर्ण अमृत गुरु चरित सुणावी, आनंद अधिक वधावुं रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ दक्षिण दिशि जंबूद्वीपमांहि, एहि जरतमो-  
जार रे ॥ उत्तर दिशि पंजाब देश जहां, लेहेरा गाम मनोहार रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ कृत्रियवंश गणेशचंद घर, जन्म लीया सुख धामें रे ॥ रूपदेवी कुक्षिशुक्तिमां, मुक्ताफल उपमाने रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ लघुवयमां पण लक्षणथी बहु, दीपंता गुरुराया रे ॥ संगतथी मली हूंढक जनने, हूंढकपंथ धराया ॥ रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ सं

( ९० )

वत उगणीशें दश मांही, उज्ज्वल कार्तिकं मासें रे  
॥ पंचमीने दिवसें लिये दीक्षा, जीवणराम गुरुपासें  
रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ ज्ञान जण्या वली देश फस्या बहु,  
जूनां शास्त्र विलोकी रे ॥ संशय पडिया गुरुने पूढे,  
प्रतिमा केम उवेखी रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ उत्तर न मिळ्या  
जब गुरुजीनें, ज्ञानकला घट जागी रे ॥ सुमतासखी  
घट आण वसी जब, ढूढपंथ दिया त्यागी रे ॥ ज०  
॥ ९ ॥ धर्म शिरोमणि देश मनोहर, गुर्जर जूमि र-  
साली रे ॥ ज्यां आवी सुविहित गुरु पासें, मन शंका  
सहु टाळी रे ॥ ज० ॥ १० ॥ परम कस्यो उपगार  
तुमें बहु, श्रीगुरु आतमराया रे ॥ जयवंता वतों आ  
जरतें, दिन दिन तेज सवाया रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ दुषम  
काल समे गुरुजी तुमें, वचन दीवडा दीधा रे ॥ शां-  
तिविजय कहे जेथी हमारं, विषम काम पण सि-  
द्धां रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली जाग बीजो ॥

॥ देशी पहेला प्रमाणें ॥ कहां गया रे मारे सुगुरु  
सनेही, रत्नत्रयीना धारी रे ॥ ज्ञान अपूरव दान दइ गुरु,  
जडता दूर निवारी रे ॥ कहां ॥ १ ॥ संवत उगणीशें बत्री  
शें, राजनगर मोजार रे ॥ संजम लीया सुविहित गुरु पा-

( ९१ )

सैं, सोल शिष्य परिवार रे ॥कहा०॥ १ ॥ चरण क-  
रण गुणधर अनूपम, श्रीगुरु आतमराम रे ॥ जिन  
शासन शणगार महामुनि, तत्त्वरमणना धाम रे ॥  
कहां० ॥ ३ ॥ नय गम जंग प्रमाण करीने, जीवादि-  
कनुं स्वरूप रे ॥ ध्रुव उत्पाद नाशथी गुरुने, जाण्युं  
निखिल अनूप रे ॥कहा०॥ ४ ॥ जाण्या ड्रव्यह गुण  
पर्याय, धर्माधर्म आकाश रे ॥ पुद्गल काल अने व-  
लि चेतन, नित्यानित्य प्रकाश रे ॥ कहां० ॥ ५ ॥  
परम कस्यो उपगार तुमें गुरु, दुर्मत दूर नसाया रे ॥  
जय जयकार थयो जिनशासन, आनंद अधिक सवा-  
या रे ॥कहा०॥ ६ ॥ जो न होत आ वखत तुमारा;  
वचन दीवडा रूडा रे ॥ तो दूषम अंधारी रातें, क्षेत  
अमें मत कूडां रे ॥कहां०॥ ७ ॥ विद्यानी वधती क-  
रवामां, जेना विविध विचार रे ॥ ए गुरुना उपकार  
कहो किम, चूले आ संसार रे ॥ कहां० ॥ ८ ॥ देश  
बहु विचरो गुरुराया, क्रोड करो शुज काम रे ॥ अंतर  
घटमां शांतिविजय पण, राखे ठे दृढ हाम रे ॥ ९ ॥  
॥ अथ गहूंली ॥

॥ जवि तुमें अष्टमी तिथि सेवोरे ॥ ए देशी ॥  
रहो गुरु राजनगर चोमासुं रे, गुणनिधि गुण तुमा-

( ९२ )

रा गाशुं ॥ रहो गु० ॥ ए आंकणी ॥ तुमें रागथी  
नही रंगाया रे, नही द्वेष रिपुथी बंधाया, महा  
मोहथी नांही लीपाया ॥ रहो० ॥ १ ॥ धन माल अ-  
ने राजधानी रे, महा संकट आकर जानी रे ॥ तुमें  
ठोडी डुनीयां दीवानी ॥ रहो० ॥ २ ॥ पांच इं-  
द्रिय सुजटथी शूरा रे, आलस विकथाथी दूरा रे,  
चार चोर कख्या चकचूरा ॥ रहो० ॥ ३ ॥ ज्ञान  
दोरीथी मनकपि बांध्यो रे, तीर तत्त्व रमणतामां  
साध्यो रे, जहां समकित अद्भुत लाध्यो ॥ रहो०  
॥ ४ ॥ गुरु विद्या वेल्डीयें विटाया रे, जेनी कल्प-  
तरु सम काया रे, ए तो समता जलथी शिंचाया ॥  
रहो० ॥ ५ ॥ तुमें शास्त्र सुधारस लीधो रे, महा  
मोहरिपु वश कीधो रे, तुमें अनुभव प्यालो पीधो  
॥ रहो० ॥ ६ ॥ तुमें ज्ञान रतन जंमार रे, करवा  
हम पर उपकार रे, थजो नोधाराना आधार ॥  
रहो० ॥ ७ ॥ तुम आणा सदा शिर धरशुं रे, तप  
नियम विशेषें करशुं रे, कहे शांतिविजय अनुस-  
रशुं ॥ रहो० ॥ ८ ॥ इति ॥